दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

पेज 7

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 103 | ग्वालियर सोमवार, 23 जनवरी 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर

कुरान को लेकर कोई कुछ नहीं बोलता क्योंकि...

भगवान राम पर टिप्पणी और बिहार के मंत्री चंद्रशेखर के रामचरितमानस पर दिए गए बयान पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने पलटवार किया है. गिरिराज सिंह ने रविवार (22 जनवरी) को पटना में कहा कि, जैसे भगवत् गीता हिंदुओं का पवित्र ग्रंथ है वैसे ही कुरान मुस्लिमों का पवित्र ग्रंथ है. कुरान को लेकर कोई कुछ नहीं बोलता क्योंकि सर तन से जुदा कर दिया जाता है. हिंदुओं के पवित्र ग्रंथ के खिलाफ बोलना आज के समय में फैशन बन गया है. बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने हाल ही में कहा था कि, तुलसीदास की रामचरितमानस ने सामाजिक भेदभाव और समाज में नफरत फैलाने को बढ़ावा दिया है. उन्होंने कहा था कि, रामचरितमानस का विरोध इसलिए किया गया क्योंकि इसमें कहा गया था कि शिक्षित होने पर समाज का निचला वर्ग जहरीला हो जाता है. रामचरितमानस, मनुस्मृति और एमएस गोलवलकर की बंच ऑफ थॉट्स जैसी किताबों ने सामाजिक विभाजन पैदा किया. इससे पहले गिरिराज सिंह ने जदयू एमएलसी गुलाम रसूल बलयावी के बयान पर भी तीखा हमला बोला था. गुलाम रसूल ने कहा था कि अगर पैगंबर मुहम्मद की ओर कोई उंगली उठाई गई तो मुसलमान हर शहर को कर्बला बना देंगे. उन्होंने कहा कि मुसलमान संकोच नहीं करेंगे क्योंकि उनकी जिंदगी और सांसें उनकी नहीं बल्कि पैगंबर के लिए हैं. गिरिराज सिंह ने जेडीयू नेता पर इस तरह के बयान देकर देश के सांप्रदायिक सद्भाव को बिगाड़ने का आरोप लगाया था. उन्होंने कहा था कि, टुकड़े टुकड़े गैंग के नेता रामायण को गाली देकर हिंदुओं का अपमान करते हैं, लेकिन कुरान पर कोई टिप्पणी करने की हिम्मत नहीं है. नीतीश कुमार एक असहाय मुख्यमंत्री हैं, जो धृतराष्ट्र की तरह यह सब देख रहे हैं और स्थिति को बिगड़ने दे रहे हैं.

हम जो काम कर रहे वो 99 फीसदी लोगों तक नहीं पहुंच रहा

नई दिल्ली। भारत के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने शनिवार (21 जनवरी) को मुंबई में एक कार्यक्रम में प्रत्येक भारतीय भाषा में सुप्रीम कोर्ट के फैसलों की प्रतियां उपलब्ध कराने संबंधी बात कही. सीजेआई ने कहा कि नागरिकों तक उनकी भाषा में पहुंचना होगा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी प्रधान न्यायाधीश के भाषण के एक अंश का वीडियो ट्वीट करते हुए उनकी बात से सहमति जताई है और सराहना की है. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा, हमारे मिशन का अगला कदम सुप्रीम कोर्ट के हर फैसले की अनुवादित प्रतियों को हर भारतीय भाषा में उपलब्ध कराना है. जब तक हम अपने नागरिकों तक उस भाषा में नहीं पहुंचते जिसे वे समझ सकते हैं, हम जो काम कर रहे हैं वो 99 फीसदी लोगों तक नहीं पहुंच रहा है. समाचार एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, सीजेआई ने मुंबई में बार काउंसिल ऑफ महाराष्ट्र एंड गोवा की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में ये बातें कहीं. अपने भाषण में सीजेआई ने तकनीकी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया. सीजेआई के भाषण को लेकर रविवार (22 जनवरी) को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, जिसमें लिखा, हाल में एक समारोह में, माननीय भारत के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने क्षेत्रीय भाषाओं में सुप्रीम कोर्ट के फैसलों को उपलब्ध कराने की दिशा में काम करने की आवश्यकता पर बात की. उन्होंने इसके लिए तकनीक के इस्तेमाल का सुझाव भी दिया. यह एक सराहने योग्य सोच है, जिससे कई लोगों, विशेषकर युवाओं को मदद मिलेगी. एक और ट्वीट में पीएम मोदी ने लिखा, भारत में कई भाषाएं हैं, जो हमारी सांस्कृतिक जीवंतता को जोड़ती हैं. केंद्र सरकार भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए बहुत से प्रयास कर रही है, जिसमें इंजीनियरिंग और मेडिसिन जैसे विषयों को मातृभाषा में पढ़ने का विकल्प देना शामिल है.

सेंसरशिप को स्वीकार करने के लिए नहीं चुने गए

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बीबीसी की विवादित डॉक्यूमेंट्री पर राजनीति जारी है. केंद्र सरकार ने डॉक्यूमेंट्री को एक प्रोपेगेंडा पीस बताकर यूट्यूब और ट्विटर से हटा दिया है. वहीं इसका लिंक अब भी कई जगहों पर मौजूद है. टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने विवादित डॉक्यूमेंट्री का अर्काइव लिंक शेयर करके पीएम मोदी पर निशाना साधा है. टीएमसी सांसद ने ट्वीट करते हुए कहा, क्षमा करें, सेंसरशिप स्वीकार करने के लिए दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए नहीं चुने गए हैं. इसके साथ ही उन्होंने कहा कि लिंक शेयर किया है. उन्होंने आगे कहा, ये रहा लिंक, आप इसमें जाकर देख सकते हैं. हालांकि बफर करने में थोड़ा समय लगता है. महुआ मोइत्रा ने सरकार की ओर से विवादित डॉक्यूमेंट्री को बैन करने पर भी नाराजगी जताई थी. उन्होंने इसे तानाशाही बताया था. उन्होंने कहा था, सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए युद्ध स्तर पर जुटी है कि भारत में कोई भी बीबीसी शो न देख सके. शर्म की बात है कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के सम्राट और दरबारी इतने असुरक्षित हैं. जेडीयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता केसी त्यागी ने भी इस डॉक्यूमेंट्री का समर्थन किया है. उन्होंने दावा किया कि इस डॉक्यूमेंट्री में फैक्ट्स थे और किसी को भी इससे कोई भी परेशानी नहीं होना चाहिए. उन्होंने कहा, हम प्रेस की आजादी के समर्थक हैं. 2002 के दंगे में कई लोग मारे गए. अगर इस संबंध में कोई भी फैक्ट आ रही सामने आ रहा है तो किसी को भी इस पर आपत्ति नहीं होना चाहिए.

आठ साल से सीएम, केवल दो बार गया विदेश

दिल्ली के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को ट्रेनिंग के लिए फिनलैंड भेजने की अपनी मांग के बीच, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार (22 जनवरी) को विदेश से ट्रेनिंग प्राप्त कर चुके सरकारी शिक्षकों के साथ संवाद किया. सीएम केजरीवाल ने सरकारी शिक्षकों को फिनलैंड भेजने के लिए दिल्ली के उपराज्यपाल के कार्यालय में फाइल दी हुई है. सीएम केजरीवाल का आरोप है कि उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना शिक्षकों को फिनलैंड भेजने में अड़ंगा लगा रहे हैं और फाइल पर हस्ताक्षर नहीं कर रहे हैं. उपराज्पाल के साथ मौजूदा विवाद के बीच, रविवार को राजधानी में सीएम केजरीवाल ने शिक्षकों संग वार्ता में कहा कि दिल्ली सरकार का मकसद सरकारी प्रिंसिपल्स और टीचर्स को दुनिया की सबसे अच्छी ट्रेनिंग दिलाना है. अपने संबोधन के दौरान उन्होंने कहा कि वह खुद मुख्यमंत्री रहते हुए आठ साल में केवल दो बार विदेश गए हैं. उन्होंने कहा कि उनका मकसद अपनी विदेश यात्रा नहीं, बल्कि टीचर्स को ट्रेनिंग के लिए विदेश भेजना है. अपने संबोधन के दौरान सीएम केजरीवाल ने कहा, जैसा मनीष जी ने अभी बताया कि पहले ट्रेनिंग के नाम पर सेमिनार होते थे, कोई स्टेडियम हायर कर लेते थे, बड़ा सा हॉल हायर कर लेते थे, उसमें हजार-डेढ़ हजार टीचर्स और प्रिंसिपल्स को इकट्ठा कर लेते थे, बाहर से किसी स्पीकर को बुला लेते थे, वो घंटा-दो घंटा लेक्चर देकर चला जाता था. आप (शिक्षक) भी जब हॉल से बाहर निकलते थे, आधी चीज याद रहती थी, आधी चीज याद नहीं रहती थी. अभी उपाध्याय साहब ने बड़ी अच्छी बात कही कि जब आप वहां जाकर ट्रिनिटी की लैब देखते हो, जब आप वहां जाकर न्यूटन ने जिस पेड़ सेब से गिरा उस पेड़ को देखते हो, स्टीफन हॉकिंग का कॉलेज देखते हो तो वो जिंदगीभर

का एक्सपीरिएंस होता है, वो यहां पर सेमिनार के जरिये उसका अनुभव नहीं किया जा सकता. सीएम केजरीवाल ने कहा, सेमिनार में ज्ञान तो मिलता है, पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशंस हो सकते हैं, अनुभव नहीं मिलता. अनुभव में और ज्ञान में बहुत फर्क है. कान से सुना हुआ ज्ञान तो एक दिन रहता है, 24 घंटे रहता है, 48 घंटे रहता है, उसके बाद खत्म हो जाता है लेकिन जो फिनलैंड होकर आए, जो कैंब्रिज होकर आए, जो सिंगापुर होकर आए वो एक जिंदगीभर का अनुभव है, वो अनुभव हमेशा अपने साथ रहता है और जो ऊर्जा आप लोगों को मिलती है, उसका कोई कहना ही नहीं. सीएम केजरीवाल ने आगे कहा, पहले ये था कि सरकारी स्कूलों के प्रिंसिपल्स को, टीचर्स को बाहर भेजने की क्या जरूरत है। उसको हमने तोड़ा है. पहली बार दिल्ली के अंदर सरकारी स्कूलों के प्रिंसिपल्स और टीचर्स को दुनिया की बेस्ट ट्रेनिंग दिलवाने की कोशिश कर रहे हैं हम लोग. दुनिया में जहां अच्छा काम सुनने को मिलता है मनीष जी को और इनकी टीम को कि यहां टीचिंग में अच्छा काम हो रहा है, यहां एजुकेशन में अच्छा काम हो रहा है, उसमें आप लोगों को भेजते हैं. मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा, हम नहीं जाते. मेरे को आज आठ साल हो गए मुख्यमंत्री बने हुए, आठ साल में दो बार विदेश गया हूं. एक बार जब मदर टेरेसा की डेथ हुई थी तो रोम गया था, इटली गया था और एक बार साउथ कोरिया गया था. बस दो बार गया हूं. मेरा मकसद है कि आप लोग विदेश जाओ, मेरे विदेश जाने से क्या होगा। मेरे विदेश जाने से... बाकी नेता महीने में दो चक्कर तो लगा आते हैं, पूरी दुनिया घूम लेते हैं पांच साल के अंदर तो.. मेरे को विदेश जाने का शौक नहीं है, मैं चाहता हूं कि मेरे टीचर्स विदेश जाएं, मैं चाहता हूं कि मेरे प्रिंसिपल्स विदेश जाएं. तो पूरी दुनिया का एक्सपीरिएंस हम आपको देना चाहते हैं.

महामारी के दौरान पीएमके 'फेवरेट मित्र' की सम्पत्ति 8 गुना कैसे बढ़ी

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने रविवार (22 जनवरी) को एक बार फिर केंद्र सरकार पर निशाना साधा है. पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने ट्वीट किया कि, महामारी के दौरान, पीएम के 'फेवरेट मित्र' की सम्पत्ति 8 गुना कैसे बढ़ी एक साल में, पीएम के 'फेवरेट मित्र' की सम्पत्ति 46प्रतिशत कैसे बढ़ी मीडिया जनता का ध्यान भटकाती रही, प्रधानमंत्री के 'मित्र' जेब काटते रहे. गरीबों की कमाई, मित्रों ने चुराई. एक हफ्ते पहले भी राहुल गांधी ने जीएसटी को लेकर केंद्र पर हमला बोला था. उन्होंने ट्वीट किया था कि, सबसे गरीब, 50त्र आबादी का योगदान, 64प्रतिशत सबसे अमीर, 10प्रतिशत आबादी का योगदान, 3त्र 'गब्बर सिंह टैक्स'- अमीरों को छूट, गरीबों को लूट. उन्होंने कहा था कि, 21 अरबपतियों के पास 70 करोड़ भारतीयों से ज़्यादा संपत्ति, सबसे अमीर 1प्रतिशत आबादी के पास हिंदुस्तान का 40प्रतिशत धन, 20 करोड़ से ज़्यादा लोगों को गरीबी से निकाला. गरीबी बढ़ाओ नीतियों ने उन्हें फिर गरीबी में धकेला, भारत जोड़ो यात्रा इन नीतियों के खिलाफ देश की हुंकार है.

रविवार को लगभग 25 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद 'भारत यात्री' चक नानक में रात्रि विश्राम करेंगे. सोमवार सुबह वे सांबा के विजयपुर से जम्मू की तरफ बढ़ेंगे. तमिलनाडु के कन्याकुमारी से सात सितंबर 2022 को शुरू हुई भारत जोड़ो यात्रा 30 जनवरी 2023 को श्रीनगर में समाप्त होगी, जब राहुल गांधी वहां स्थित कांग्रेस मुख्यालय में तिरंगा फहराएंगे.

अखिलेश यादव ने की जाति जनगणना पर सीएम नीतीश कुमार की तारीफ

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने बिहार में होने वाली जाति जनगणना पर नीतीश सरकार की तारीफ की. अखिलेश यादव ने कहा कि जाति सर्वेक्षण होना ही चाहिए. उन्होंने कहा, बिहार में ये हो रहा है तो मैं इसके लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बधाई देता हूं.

उत्तर प्रदेश में जाति-जनगणना की जरूरत बताते हुए अखिलेश बोले, अब यहां जाति सर्वेक्षण नहीं होता है. 1931 में अंग्रेजों ने भी इस बारे में सोचा था कि ऐसा कदम उठाना चाहिए. विभिन्न जातियों और समुदायों को संविधान के अधिकार तभी दिए जा सकते हैं, जब उनकी गिनती मालूम हो. उन्होंने कहा कि इस तरह के सर्वे से सभी जातियों का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है. अखिलेश यादव ने ये बातें रविवार (22 जनवरी) को समाजवादी पार्टी के सदस्य और पूर्व सांसद के नाम पर बने जनेश्वर मिश्रा पार्क में कहीं. उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी लंबे समय से इस तरह के सर्वेक्षण की मांग कर रही है और हमने अपनी चुनावी रैलियों के दौरान भी सरकार बनने के तीन महीने के भीतर इसे शुरू करने का वादा किया था. यूपी की मौजूदा सरकार पर निशाना

साधते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि यहां यूपी में गरीब हों या कोई और तबका, आज न्याय की उम्मीद कोई नहीं कर सकता. लोकतंत्र और संविधान ने हमें जो अधिकार दिए हैं, वे अधिकार भी छीने जा रहे हैं. अखिलेश ने कहा कि बीजेपी जानबूझ कर ऐसे फैसले ले रही है, जिससे मुट्ठी भर उद्योगपतियों को फायदा हो. इससे जनता तो परेशान है, लेकिन बीजेपी सभी संस्थानों में अपने लोगों को बढ़ावा दे रही है. अखिलेश बोले कि यूपी में अब इस पार्टी (बीजेपी) के दिन गिने-चुने हैं. उन्होंने कहा, मैं आज कहना चाहता हूं, उनकी राज्य कार्यकारिणी बैठी तो कहा गया कि केवल 398 दिन बचे हैं. अपने हालिया तेलंगाना दौरे के बारे में अखिलेश ने कहा कि हम वहां तेलंगाना के मुख्यमंत्री के निमंत्रण पर गए थे, जिन्होंने कई अन्य मुख्यमंत्रियों को भी आमंत्रित किया था. उन्होंने जनेश्वर मिश्रा को श्रद्धांजलि अर्पित कर कहा, हम आज जनेश्वर मिश्रा जी को याद कर रहे हैं. उन्होंने और नेताजी (मुलायम सिंह यादव) ने समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाया था. आज हम सब संकल्प लेते हैं कि हम इस आंदोलन को और आगे ले जाएंगे.

जजों की नियुक्ति पर आरएडब्ल्यू और आईबी रिपोर्ट हुई सार्वजनिक

न्यायाधीशों की नियुक्ति से जुड़े कॉलेजियम सिस्टम को लेकर बीते कुछ महीनों से केंद्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट में मतभेद चल रहा है. कॉलेजियम विवाद के बीच सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार जजों के बारे में सारी जानकारी को सार्वजनिक करने का फैसला किया है. सूत्रों के हवाले से एनडीटीवी ने कहा कि केंद्र सरकार की आपत्तियों का जवाब देने के लिए चीफ जस्टिस की अगुवाई में कॉलेजियम ने तय किया कि इस बार सारे मामले सार्वजनिक किए जाएं. इससे खुफिया एजेंसियों में बेचैनी पैदा हो गई है.

केंद्र सरकार की आपत्तियों को सार्वजनिक नहीं करने की प्रथा रही है. इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के पदों के लिए संभावित उम्मीदवारों की छानबीन करती हैं. खुफिया एजेंसियों की गोपनीयता को बनाए रखने की भी प्रथा रही है. हालांकि, अब इन सभी बातों के खुलासे ने सरकार के भीतर बड़ी चिंता पैदा कर दी है, जिसे लगता है कि इसका खुलासा नहीं किया जाना चाहिए था और सार्वजनिक रूप से इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए था. सूत्रों के हवाले से एनडीटीवी ने कहा कि आजादी के बाद से चली आ रही इस प्रथा के बारे में चीफ जस्टिस को संवेदनशील बनाने

के लिए अंतिम फैसला लिया जाएगा. सरकार के सूत्रों का कहना है कि न्यायाधीशों के पुनर्मूल्यांकन की विधिवत प्रक्रिया की जाएगी और अगले सप्ताह के अंत में अंतिम निर्णय लिया जाएगा. सूत्रों ने एनडीटीवी को बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने न्यायाधीशों की पदोन्नति पर केंद्र के साथ अपने संवाद को सार्वजनिक करने का अभूतपूर्व कदम उठाने से पहले चार दिनों तक विचार-विमर्श किया था. सूत्रों के अनुसार, चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने पूरे मामले को सार्वजनिक करने से पहले न केवल कॉलेजियम के न्यायाधीशों के साथ परामर्श किया था, बल्कि कॉलेजियम के भावी न्यायाधीशों से भी चर्चा की थी. दरअसल, कॉलेजियम की ओर से सीनियर एडवोकेट सौरभ कृपाल को जज के तौर पर नियुक्ति देने की सिफारिश पर केंद्र सरकार ने आपत्ति जताई थी.

सौरभ कृपाल के नाम पर था मतभेद- सरकार ने सौरभ के विदेशी पार्टनर होने के चलते सुरक्षा के मद्देनजर कॉलेजियम से उनके नाम पर फिर विचार करने के लिए कहा था. विदेशी पार्टनर होने के चलते इंटेलिजेंस ब्यूरो ने भी सौरभ के खिलाफ ही रिपोर्ट दी थी. इसके बाद सुप्रीम कोर्ट भी अड़ गया. कॉलेजियम ने हाईकोर्ट में जजों की नियुक्ति में आरएडब्ल्यू और आईबी रिपोर्ट को भी सार्वजनिक कर दिया.

देश पर 155 लाख करोड़ हो गया कर्ज

कांग्रेस ने देश पर कर्ज के मुद्दे को लेकर मोदी सरकार को घेरा है. केंद्र की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठाया है. कांग्रेस प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने बीजेपी पर आरोप लगाते हुए कहा कि बीते नौ सालों में देश पर कर्ज 55 लाख करोड़ रुपये से बढ़ कर 155 लाख करोड़ रुपये हो गया. प्रति व्यक्ति कर्ज एक लाख नौ हजार रुपये, नौ सालों में प्रति व्यक्ति पर कर्ज में 66 हजार रुपये का इजाफा हुआ है. बता दें कि आठ दिनों बाद यानि 1 फरवरी को सरकार आम बजट पेश करनेवाली है. मार्च 2014 में देश पर 55 लाख करोड़ का कर्ज था, वो मार्च 2023 तक (अनुमानित) बढ़ कर 155 लाख करोड़ रुपया हो गया है. यानी बीते नौ सालों में कर्ज पौने तीन गुना बढ़ गया है. प्रत्येक देशवासी पर एक लाख नौ हजार का कर्ज है. बीते नौ सालों में प्रति व्यक्ति पर 66 हजार रुपयये कर्ज बढ़ गया है. कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा है कि कर्ज का फायदा आम लोगों को नहीं हुआ है. वही गिने चुने खरबपतियों को इसका बड़ा फायदा हो रहा है. बीबीसी डॉक्यूमेंट्री से जुड़े विवाद पर गौरव वल्लभ ने कहा, सरकार की ब्लॉक इन इंडिया की नीति है. यदि बीबीसी का मुख्यालय भारत में होता तो एजेंसियों से छापे डलवाया जाता. आंखें बंद करने से सच्चाई नहीं छुप सकती. वाजपाई जी ने उन्हें राजधर्म की याद दिलाई थी. वही राजधर्म बीबीसी की डॉक्यूमेंट्री भी दिख रहा है. सरकार की कार्रवाई से लोगों के बीच यही संदेश गया है कि डॉक्यूमेंट्री में सच्चाई दिखाई गई है. सोमनाथ मंदिर और गजनवी से जुड़े साजिद रशीदी के बयान पर कांग्रेस प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने कहा कि वो कोई इतिहासकार नहीं हैं, मीडिया में जगह पाने के लिए ऐसे बयान देते हैं. ऐसे लोगों पर प्रतिक्रिया देने का कोई मतलब नहीं है.

बागेश्वर बाबा धीरेंद्र शास्त्री का क्यों हो रहा विरोध बीजेपी नेता कपिल मिश्रा ने बतायी वजह

नई दिल्ली। बागेश्वर धाम बाबा धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री इन दिनों चर्चाओं का विषय बने हुए हैं. शास्त्री को जहां एक ओर विरोध का सामना करना पड़ रहा है तो वहीं कई नेता उनके समर्थन में भी उतर रहे हैं. इसी कड़ी में आज दिल्ली में लोग धीरेंद्र के समर्थन में उतर कर प्रदर्शन कर रहे हैं. इस प्रदर्शन में बीजेपी नेता कपिल मिश्रा भी शामिल हैं. धीरेंद्र शास्त्री के समर्थन में ये प्रदर्शन दिल्ली के रोहिणी इलाके में हो रहा है. एबीपी न्यूज की टीम मौके पर पहुंची और लोगों से इस प्रदर्शन के असल कारणों पर चर्चा की. ये प्रदर्शन रोहिणी के जापानी पार्क में हो रहा. प्रदर्शन कर रहे लोगों ने इस दौरान धीरेंद्र शास्त्री के समर्थन में जोर जोर से नारे लगाए और विरोध जताने वालों पर आपत्ति जतायी. प्रदर्शन में शामिल बीजेपी नेता कपिल मिश्रा ने एबीपी न्यूज से खास बातचीत कर कहा, जो भी धर्मगुरू, मठाधीश या कथावाचक धर्म परिवर्तन के खिलाफ बात करेंगे, लव-जिहाद के खिलाफ खुलकर चर्चा करेंगे. हमारा कर्तव्य है कि हम उनके साथ खड़े हों. इसलिए हम आज इस प्रदर्शन में शामिल हुए हैं. एबीपी टीम ने कपिल मिश्रा से सवाल करते हुए पूछा कि, अंधविश्वास को बढ़ावा देने का जो आरोप धीरेंद्र पर लगा रहा उस पर क्या कहना है... इसका जवाब देते हुए कपिल बोले, विवाद केवल एक ही है कि इन्होंने (धीरेंद्र) ने घर वापसी क्यों करवायी

अंधविश्वास, चमत्कारी जैसी बातें केवल असल में घर वापसी पर पर्दा डालने के लिए की गई है. जो लोग लव-जिहाद पर बात नहीं चाहते या घर वापसी पर बात नहीं चाहते वो धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ विरोध जता रहे हैं. बता दें, यहां घर वापसी का मतलब, दूसरे धर्म को अपनाने के बाद वापस अपने धर्म को अपनाना. कपिल मिश्रा ने ये भी कहा कि अंधविश्वास की बात करने वाले लोग पहले मुझे वो शिकायतें दिखाएं जो उन्होंने नकली पादरों के खिलाफ की हों. उन्होंने कहा, जिन लोगों की आस्था नहीं है वो धीरेंद्र जी के पास ना जाए और जिसनकी आस्था है वो जाए. कपिल मिश्रा ने ये भी बताया कि वो आजतक धीरेंद्र शास्त्री से नहीं मिले हैं.

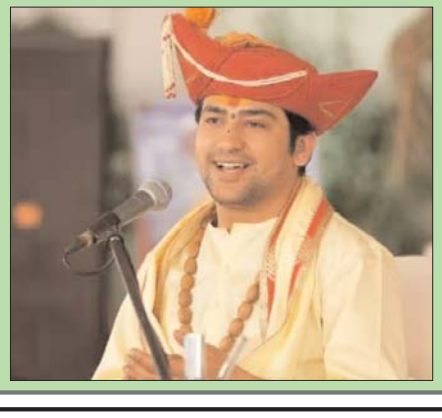

राज्यस्तरीय क्रिकेट टूर्नामेंट के फाइनल में जबलपुर ने नागपुर को दी मात

जबलपुर से निशांत कुशवाह रहे मैन ऑफ द मैच,नागपुर से स्पर्श जैन मैन ऑफ द सीरीज रहे

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- मध्यप्रदेश विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष डॉ.गोविन्द सिंह के पिता स्वर्गीय मथुरा सिंह फाउंडेसन समिति दबोह के तत्वाधान में खेले जा रहे 16वे राज्यस्तरीय क्रिकेट टूर्नामेंट महाकुंभ 16 जनवरी से 22 जनवरी तक दबोह के शासकीय इंटर कॉलेज के मैदान पर खेला जा रहा था।कार्यक्रम के अंतिम दिन के शुभारंभ में मुख्यातिथि के रूप में मध्यप्रदेश विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष मौजूद रहे। तो वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला सहकारी बैंक के पूर्व अध्यक्ष उदय प्रताप सिंह सैंगर उर्फ राजाबाबू द्वारा की गई।कार्यक्रम में मौजूद अतिथियों के द्वारा सर्व प्रथम मध्यप्रदेश नेता प्रतिपक्ष एवं लहार विधायक के पिता स्व.मथुरा सिंह के छाया चित्र पर दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया तथा आयोजन समिति के कोषाध्यक्ष रियाज खान,सचिव चौधरी हाकिम सिंह एवं पूर्व पार्षद शेरे पठान ने अतिथियों का खिलाड़ियों से परिचय कराया तदोपरांत दोनों अतिथियों ने क्रिकेट टूर्नामेंट का आनंद लिया वहीं क्रिकेट टूर्नामेंट अंतिम दिन में पूरे टूर्नामेंट का निचो? का महामुकाबला जबलपुर व नागपुर बीच खेला गया।जिसमे नागपुर ने टॉस जीतकर पहले फील्डिंग करने का निर्णय लिया व जबलपुर को बैटिंग करने का मौका दिया जबलपुर ने बैटिंग करते हुए 24.4 ओवर में 220 रन बनाये और अपने दसो विकेट खो दिए व नागपुर के सामने 221 रनों का लक्ष्य रखा।जबाब में मैदान में उतरी नागपुर ने निर्धारित 25 ऑवर में मात्र 206 रन बना ही बना सकी और जबलपुर ने 14 रनों से यह मैच जीत लिया।जिसमे जबलपुर के निशांत कुशवाह मैन ऑफ द मैच रहे सम्पूर्ण टूर्नामेंट में शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए स्पर्श जैन मैन ऑफ द सीरीज रहे अंत मे अतिथियों के द्वारा विजेता को ट्रॉफी सहित एक लाख इक्यावन हजार (1,51000) एवं उपविजेता को ट्रॉफी सहित एक लाख (1,00000) प्रदान किया गया वही समिति के कार्यकर्ताओं को भी उपहार भेंट किये गए इस दौरान नेता प्रतिपक्ष डॉ.गोविंद सिंह ने विजेता टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हए कहा कि जो हार गये है वह लोग अपना मन छोटा न करे हार जीत तो खेल में होती ही है प्रयास करो मेहनत करो और अगली बार जीत दर्ज करा लेना वही उन्होंने आयोजन समिति को 16 बर्षो से लगातार इस आयोजन को कराने एवं सफल बनाने के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी मैच का आँखों देखा हाल रजनीश पालीवाल सर,रामनारायण सर,श्यामू राजोरिया,रामू श्रीवास्तव एवं जीएस कौरव द्वारा सुनाया गया इस मौके पर लाखो दर्शको ने मैच का आनंद लिया कार्यक्रम में आयोजन समिति के सचिव चौधरी हाकिम सिंह संरक्षक नाजि,स्कोरर ईमरान सर,नीरज यादव,पबन कुशबाह,दिलीप सोनी,हिमांशू मुदगिल,धर्मेंद्र कौरव(धरमू),पंकज शर्मा,राकेश रजक,प्रदीप चौधरी आदि लोग मौजूद रहे।

एसपी समीर सौरभ, एएसपी विजय डाबर, कोतवाली टीआई कमलसिंह गहलोत ने किया अंतर्राज्यीय मोटर सायकल चोर गैंग का खुलासा

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

बालाघाट शहर व आसपास क्षेत्र में लगातार बढ़ती हुई मोटर सायकल चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस अधीक्षक बालाघाट समीर सौरभ के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बालाघाट विजय डाबर के मार्गदर्शन में कोतवाली पुलिस के थाना प्रभारी कमलसिंह गहलोत के द्वारा पृथक पृथक टीम बनाकर अज्ञात चोरों की पतासजी हेतु लगातार प्रयास किये जा रहे थे। बालाघाट पुलिस ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि दिनांक 17 जनवरी को चोरी हुई मोटर सायकल को बरामद करने तथा अज्ञात आरोपियों के पता के तलाश हेतु पुलिस के मुखबिर तंत्र को सक्रिय किया गया था। निरंतर प्रयास के बाद मुखबिर तंत्र की सूचना के आधार पर आरोपी राजू राजू टेम्भरे पिता मधुप्रसाद टेम्भरे जाति पवार उम्र 20 वर्ष निवासी वार्ड न . 18 गोगलई थाना नवेगांव को अभिरक्षा में लेकर हिकमत अमली से पूछताछ करने पर अपने अन्य साथी कुलदीप गौतम पिता रामू गौतम उम्र 22 वर्ष जाति पवार निवासी वार्ड न . 13 ग्रामबुड़ैना खुर्द थाना हट्टा , रामकिशोर उर्फ टिंकू पिता श्यामलालसोनेकर उम्र 22 वर्ष जाति कलार नि . सेलवटपार थाना रामपायली के साथ मिलकर अपनी मोटरसाइकिल अपाचे आरटीआर से रैकी करते हुये स्नेहनगर बालाघाट से मोटरसाइकिल चोरी करना स्वीकार किया गया। इसके साथ ही आरोपियों के द्वारा बालाघाट शहर , थाना ग्रामीण , भरवेली , हट्टा , लालबर्रा , वारासिवनी तथा सीमावर्ती क्षेत्र गोंदिया , नागपुर (महाराष्ट्र) से समय स्थान देखकर मोटर सायकलो का लॉकतोड़कर डारेक्ट करके चोरी करने के बारे में खुलासा किया। आरोपीगणो द्वारा उक्त मंहगी मंहगी मोटर सायकलों को सस्ते दामों पर ग्रामीण क्षेत्रों में बेचकर अवैध लाभ कमाया जाता था एवं स्वयं के मंहगे मंहगे शौक मंहगे मोबाईल फोन तथा मोटर सायकिल आदि में खर्च किये जाते थे। आरोपीगण द्वारा तरीकाये वारदात बताये जाने पर थाना कोतवाली की अलग अलग टीमें गठित कर आरोपियों द्वारा चोरी की गई मोटर सायकलों तथा अन्य आरोपीगणों की तलाश पतारसी तत्परता से करते हुये कुल-09 आरोपीगणो से रॉयल इन्फील्ड बुलेट , याम्हा आर15 , एवेन्जर , केटीएम , पल्सर , अपाचे जैसी मंहगी मंहगी गाड़ियो के अलावा स्प्लेण्डर प्लस , सिटी 100 , सीडी डीलक्स आदि कुल 23 मोटर सायकल जिनकी कीमती लगभग 24 लाख रूपये की जप्त की गई हैं । उक्त जप्त शुदा मोटर सायकलों की चोरी के संबंध में थाना कोतवाली बालाघाट में 05 , थाना नवेगांव ग्रामीण में 02, थाना भरवेली में 01 , थाना हट्टा में 04 , थाना लालबर्रा में 02, थाना सिटी कोतवाली गोंदिया (महाराष्ट्र) में 01 एवं थाना कलमणा नागपुर शहर (महाराष्ट्र) में 01 अपराध पंजीबद्ध हैं एवं अन्य मोटर सायकलों की चोरी के संबंध में आरोपियों से पूछताछ की जा रही हैं । थाना कोतवाली बालाघाटमें गिरफ्तार आरोपी राजू टेम्भरे पिता मधुप्रसाद टेम्भरे जाति पवार उम्र 20 वर्ष निवासी वार्ड न . 18 गोगंलई थाना नवेगांव कुलदीप, गौतम पिता रामू गौतम उम्र 22 वर्ष जाति पवार निवासी वार्ड न . 13 ग्राम बुड़ैनाखुर्द थाना हट्टा, रामकिशोर उर्फ टिंकू पिता श्यामलाल सोनेकर उम्र 22 वर्ष जाति कलार निवासी सेलवटपार थाना रामपायली, तथा चोरी की मोटरसाइकिल खरीदने का अपराधी संजय रहांगडाले पिता महेश रहांगडाले उम्र 26 वर्ष जाति पवार नि . ग्राम भूतरटोला थाना हट्टा, अक्षय शरणागत पिता दिलीप शरणागत जाति पवार उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम नाहरवानी थाना हट्टा, ओमप्रकाश टेम्भरे पिता बाबूलाल टेम्भरे जाति पवार उम्र 22 वर्ष निवासी ग्राम चारगांव थाना रावणवाड़ी गोंदिया, अल्पेश ठाकुर पिता लखन ठाकुर जाति गोवारा उम्र 24 वर्ष निवासी ग्राम बोरगांव थाना गोरेगांव गोंदिया, विजय पांचे पिता सुरेन्द्र पांचे उम्र 20 वर्ष जाति मरार निवासी ग्राम बुड़ैना थाना हट्टा, सागर शेण्डे पिता रामचरण शेण्डे जाति नाई उम्र 21 वर्ष निवासी ग्राम पाथरवाड़ा बालाघाट से आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। जप्त शुदा बरामद वाहनों की जानकारी के संबंध में थाना कोतवाली में जाकर सम्पर्क किया जा सकता हैं।

मोटरसाइकिल चोर गिरोह को पकड़ने में इनका रहा विशेष योगदान-उक्त प्रकरण के खुलासे में नगर पुलिस अधीक्षक अंजुल अयंक मिश्रा , थाना प्रभारी कोतवाली बालाघाट कमल सिंह गेहलोत , उनि विकास सिंह , उनि महेश शर्मा , कार्य . उनि कोमेन्द्र गौतम , कार्य . सउनि राजू सिंह दाहिया, कार्य. सउनि बखत सिंह परते, कार्य. प्रआर 107 राहुल गौतम, कार्य. प्रआर 689 दिवेश तिवारी , कार्य प्रआर 964 जितेन्द्र यादव, प्रआर 976 दिनेश डोंगरे, आर . 459 गजेन्द्र माटे, आर . 28 शैलेष गौतम , आर . 1118 प्रदीप पुट्टे, आर . 132 अंकुर गौतम, आर . 799 शेख शहजाद, आर . 417 सुनील बघेल, चालक प्रआर 424 दिनेश ठाकरे , चालक प्रआर 761 नंदकिशोर टेकाम, आर . 1214 पदम सिंह उइके, आर . 1142 मनोज बघेल, आर . 675 तिलक अड़मे, आर . 407 दीनदयाल रहांगडाले, आर . 1504 प्रकाश जंघेला, आर . 1440 विद्यांचल इवनाती, आर . 1480 शुभम बिंदेल एवं आर पंकज सिंह बिस्ट , आर . बलीराम यादव सायबर सेल बालाघाट , सहित थाना कोतवाली स्टाफ की सराहनीय भूमिका रही।

खमरिया मंडल भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ की कार्यकारिणी घोषित

खमरिया मंडल भाजपा का सबसे मजबूत गढ़: अजय सुखदेवे

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

खमरिया मंडल भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ की बैठक ग्राम बडगांव में पूर्व सरपंच एवं भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ खमरिया मंडल के मंडल संयोजक सुमेंद्र बिसेन के निज निवास पर आयोजित की गई। बैठक में कार्यकारिणी का विस्तार किया गया। बैठक की शुरुआत मुख्य अतिथि भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ जिला संयोजक अजय सुखदेवे, भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ जिला कार्यकारिणी सदस्य पंकज बांगरे एवं अकाल सिंह उईके, बडगांव सरपंच राधेश्याम उइके, सुमेंद्र बिसेन, टेकाडी पूर्व सरपंच छगनलाल बिसेन, नयाटोला उपसरपंच अरुण परिहार, पूर्व उपसरपंच नंदलाल हनवत, पूर्व उपसरपंच पाथरी विनोद हनवत एवं उपस्थित अतिथियों के द्वारा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण किया गया। मुख्य अतिथि भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ जिला संयोजक अजय सुखदेवे ने बताया की

खमरिया मंडल भाजपा का सबसे मजबूत गढ़ है इसे और भी अधिक मजबूत बनाने को लेकर कार्य योजना बनाई गई एवं खमरिया मंडल की कार्यकारिणी का विस्तार किया गया, जिसमें मंडल सहसंयोजक अकाल सिंह उईके कटनझरी, मंडल कार्यकारिणी सदस्य बसंत पटले नैतरा, मंडल कार्यकारिणी सदस्य अरुण परिहार नयाटोला, मंडल कार्यकारिणी सदस्य दिलीप हरिनखेडे पिपरिया, मंडल कार्यकारिणी सदस्य नंदलाल हनवत नेवरगांव, मंडल कार्यकारिणी सदस्य झनकलाल बिसेन टेकाड़ी, मंडल कार्यालय प्रभारी रूपचंद पारधी पाथरी, मंडल सोशल मीडिया प्रभारी सचिन बघेले बडगांव, मंडल सोशल मीडिया प्रभारी श्याम प्रकाश पप्पू गौतम पटेलटोला, मंडल कार्यकारिणी सदस्य, आदर्श वरकडे कटंगझरी को मनोनित किया गया है। बैठक में सफल मंच संचालन दीपक क्षिरसागर द्वारा किया गया एवं भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ बालाघाट मंडल के मंडल संयोजक अजय आसोले द्वारा आभार व्यक्त किया गया। बैठक में भाजपा झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सरस्वती जनजाति संस्कार केंद्र का दो दिवसीय आवर्ती प्रशिक्षण हुआ सपन्न

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

विद्या भारती -महाकौशल वनांचल शिक्षा सेवा न्यास जबलपुर जिला बालाघाट द्वारा संचालित सरस्वती जनजाति संस्कार केंद्र संकुल लांजी घोटी का आवर्ती बैठक सरस्वती शिशु मंदिर लांजी में किया गया, मुख्य अतिथि विजय रामटेकर जिला संयोजक सरस्वती जनजाति संस्कार केंद्र जिला बालाघाट एवं कोटेश्वर ज्ञानपीठ समिति लांजी के सचिव, डॉ वेद प्रकाश लिल्हारे, रामेश्वर मटाले समाज सेवक का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। डॉ वेद प्रकाश के द्वारा शाश्वत हिंदू गर्जना की पुस्तक दिया गया, एवं प्रत्येक ग्राम के बच्चों के लिए नवोदय का निशुल्क कक्षा संचालित किया जाएगा ओर सभी प्रकार के बीमारी का इलाज एक विशाल रूप में लांजी क्षेत्र में किया जाएगा एवं एक बड़ी राशि में समर्पण किया?। डॉ वेद प्रकाश लिल्हारे, बारेलाल बढ़गैया, विजय रामटेकर, सुखपाल भरें, प्रेम लाल कलपुरे का विशेष योगदान रहा जनजाति शिक्षा के जिला समन्वयक शुभलेश साहू सरस्वती जनजाति संस्कार केंद्र जिला बालाघाट , संकुल समन्वयक भुमेश्वर ठाकरे संकुल लांजी घोटी ने बताया की लांजी घोटी क्षेत्र के अंतर्गत 28 केंद्र संचालित है , सभी आचार्यों के प्रत्येक माह को दो दिवसीय आवर्ती प्रशिक्षण लांजी में किया जाता है, सभी कार्यक्रमों में विजय रामटेकर का विशेष सहयोग रहता है, शुभलेश साहू द्वारा अतिथियों का हृदय से आभार व्यक्त किया ।

सिद्धागंगा विद्या संस्थान के पदाधिकारीयों ने मुणोत को किया सम्मानित

पुष्पाजंली टुडे

बेंगलुरू। सिद्धागंगा विद्या संस्थान मदनायकना हल्ली के वार्षिकोत्सव नमना 2023 का शुभारंभ मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत एवं संस्थान के अध्यक्ष नवीन कुमार ने पूज्य श्री श्री डॉ शिवकुमार स्वामी के समक्ष दीप प्रज्वलन से किया बच्चों ने मनभावन सांस्कृतिक प्रस्तुति से एकत्रित जनसमूह का मन मोह लिया मुणोत ने अपने वक्तव्य में डॉक्टर शिव कुमार स्वामी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों का उत्साहवर्धन किया संस्थान के पदाधिकारियों ने मुणोत को सम्मानित किया

विमुक्त घुमंतु अर्ध घुमंतू जनजाति प्रमाण पत्र के संबध में संगोष्ठी का आयोजन हुआ

दैनिक पुष्पांजली टुडे

लहार । बुद्धपुरा रोड लहार में बघेल पाल समाज के द्वारा संगोष्ठी हुई जिसमें एक सैक?ा से अधिक समाज के लोग उपस्थित रहे* *इस संगोष्ठी मै विमुक्त घुमंतु अर्ध घुमंतु जन जाति प्रमाण पत्र बनाये जाने के संबध मै जानकारी से अवगत कराया गया जिसमें मुख्यअतिथि के रूप मै संगठन के जिला प्रभारी एडवोकेट आर.बी सिंह बघेल ने शासन की कल्याणकारी जानकारी दी । इस अवसर पर नवनियुक्त जिलाध्यक्ष बदन सिंह बघेल शिक्षक के द्वारा घुमंतु अर्ध घुमंतु जाती प्रमाण पत्र के शैक्षणिक लाभ बताये गए इस अवसर पर विकलांग बल के राज्य सचिव प्रोफेसर सौरभ बघेल को जिला मिडिया प्रभारी का नियुक्त पत्र प्रदान किया । गया एवं रामवीर बघेल शिक्षक को जिला उपाध्यक्ष एवं एडवोकेट सरदार सिंह बघेल को विधि सलाहकार के रूप में नियुक्ति किया।इस कार्यक्रम मै मुख्य उपस्थित रहे पूर्व सरपंच सुखदीन बघेल,हरचरण बघेल,रिटायर शिक्षक नरेश सिंह बघेल,वकील मर्दान सिंह बघेल,महेश सिंह बघेल,संजीव बघेल,प्रमोद बघेल, शिक्षक भगवान सिंह बघेल अयोध्या प्रसाद बघेल आदि।

सावरीकला में तीन दिवसीय कबीर सत्संग संपन्न

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

जिले की लांजी तहसील अंतर्गत ग्राम सावरीकला में सदगुरु सतकबीर साहेब और सतलोक वासी अटलदास साहेब बंदगी वंशगदी दामाखेड़ा पंथ श्री हजूर प्रकाश मुन्नीनाम साहेब के द्वारा संचालित एवं सतलोक वासी अटल दास साहेब द्वारा प्रेरित ग्राम सावरीकला के आमीन माता महिला मंडल के द्वारा ग्राम सावरीकला में तीन दिवसीय कबीर सत्संग आयोजित किया गया है। जिसमें कबीर मंसूर प्रह्लाद वैष्णव साहेब, ओमप्रकाश दास बैरागी तथा नागपुर से यशवंत महाजन साहेब के द्वारा प्रवचन दिया गया। सम्मेलन में ग्राम के सभी कबीरपंथी लोगों के द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र की अनेक ग्राम सावरीकला, उमरी, देवलगांव एवं कालीमाटी के अलावा अन्य गांवों से सभी कबीरपंथी के द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाया गया है। जिसमें आमीन माता महिला मंडल सावरीकला की अध्यक्ष

निर्मलाबाई टेभरे एवं सचिव वंदनाबाई पटले के संरक्षण में एक कार्य संपादित किया गया। 20 जनवरी को 08.बजे प्रभात फेरी, 09 बजे साहेब जी का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। उसके बाद 12 बजे से 4 बजे तक तथा रात्रि 9 बजे से 12 बजे तक आध्यात्मिक प्रवचन किया गया। दिनांक 21 जनवरी को सुबह 8 बजे से लेकर 9 बजे तक गुरु महिमा पाठ किया गया है। तथा 12 बजे से लेकर 4 बजे तक संगीतमय प्रवचन शाम को संध्या पाठ 8 बजे से लेकर 9 बजे तक संध्या पाठ किया गया। प्रातः 9 से 12 बजे तक के जीवनदायनी प्रवचन किया गया। तिसरे दिन 22 जनवरी को सुबह 9 बजे से लेकर शाम 3 बजे तक सात्विक चौका आरती किया गया और शाम 4 बजे से भोजन महाप्रसाद का कार्यक्रम रखा गया है। वहीं रात्रि 09 बजे अमृतवाणी से प्रवचन किया जिसमें नवांकुर संस्था ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति, गुणवंता युवा जनकल्याण संस्था सावरीकला के सभी सदस्य एवं ग्राम सावरीकला के सभी लोगो के सहयोग से कार्यक्रम सफल किया गया है।

नगर परिषद लांजी में आज से 3 दिवसीय आनंद उत्सव महापर्व का आगाज

खेलकूद के अलावा सांस्कृतिक प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को मिलेगा मंच

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

लांजी- मध्यप्रदेश शासन के द्वारा संपूर्ण नगरिय एवं पंचायत क्षेत्रो में आनंद उत्सव करवाया जा रहा है इसी कड़ी में नगर परिषद लांजी मे आनंद महोत्सव 2023 का आयोजन 23 जनवरी से 25 जनवरी तक किया जा रहा है। आयोजित आनंद महोत्सव के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि हीराचंद आसटकर पूर्व जिला पंचायत सदस्य लांजी के हस्ते शुभारंभ होगा। वंही समापन समारोह के मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष रमेश भटेरे, विशिष्ट अतिथि श्रीमती ज्योति ठाकुर एसडीएम, दुर्गेश आर्मो एसडीओपी, सतीश चौधरी तहसीलदार के आतिथ्य में संपन्न होगा। आनंद उत्सव कार्यक्रम के आयोजक अध्यक्ष श्रीमती रेखा ताराचंद कालबेले, उपाध्यक्ष संदीप रामटेकर, सीएमओ राजीव लोचन कटारे, पार्षद गण संजय सय्याम, श्रीमती विभा तिवारी, श्रीमती पूनम आसटकर, श्रीमती प्रेमलता खोब्रागड़े, कल्पना डोलस, श्रीमती तेजेश्वरी गोदुले, श्रीमती शिखा गोस्वामी, किशोर रामटेकर, विजय गोस्वामी, सौरभ पशीने, मुकेश रणदिवे, दिनेश कचवाहे, कस्तुरा वाकड़े के द्वारा समस्त नगर की जनता से उक्त कार्यक्रम में पंहुचने तथा आनंद उत्सव के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने की अपील की गई है।

आनंद महोत्सव में तीन दिवसीय खेल एवं अन्य आयोजन इस प्रकार होंगे-नगर परिषद लांजी द्वारा आयोजित आनंद महोत्सव में 23 से 25 जनवरी तक तीन दिवसीय आयोजन में प्रथम दिवस सांस्कृति भाग 1, लोक संगीत, भजन कीर्तन, चित्रकला, रंगोली, अन्ताक्षरी, प्रश्न मंच प्रतियोगिता, फैंसी ड्रेस, पाककला, द्वितीय दिवस 24 जनवरी को खेल कुद जिसमें कबड्डी, रस्सा कसी, कुर्सी दौड़, व्हालीबॉल, जलेबी दौड, बैडमिंटन, फुटबॉल, तृतीय दिवस 25 जनवरी को नृत्य गायन एवं पुरस्कार वितरण किये जायेंगे, खेल के लिये आयु सीमा निर्धारित की गई है। जिसमे 15 वर्ष से कम आयु, 15 से 35 वर्ष की आयु तक, 35 से अधिक आयु तक, 50 से अधिक आयु तक आयु वर्ग के लोग हिस्सा ले सकते है।

पाटन जिला शिक्षक क्रिकेट गुप द्वारा आयोजित टीचर्स प्रीमियर लीग-2023 का शुभारंभ

शिक्षकों के स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के उद्देश्य से धारपुर मेडिकल कॉलेज मैदान में किया गया. जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी श्री नेहलभाई रावल साहब, शैक्षिक महासंघ के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष श्री बाबूभाई देसाई, पाटन जिला प्राथमिक शिक्षक वित्त संघ के अध्यक्ष श्री प्रीतेशभाई, महासंघ के जिला अध्यक्ष श्री कल्पेशभाई पटेल सहित अन्य अतिथियों में नीलेशभाई, जीतूभाई शामिल हैं (चानसमा), बेचरभाई, प्रवीणसिंह, सागरभाई, मनीषभाई और पूरी आयोजन टीम, प्रत्येक टीम के कप्तान और लगभग 150 खिलाड़ी मौजूद थे। टूर्नामेंट में किसी भी तरह से दान देने वाले सभी दानदाताओं और जिले के विभिन्न तालुका मंडली को भी सम्मानित किया गया। इस टूर्नामेंट में जिले के विभिन्न तालुकों से कुल 15 टीमों ने भाग लिया है और इसे केवल छुट्टियों के दिनों में खेलने की योजना है।आज खेले गए पहले मैच में सिद्धपुर टीचर्स इलेवन ने चानसमा टीचर्स इलेवन के खिलाफ, दूसरे मैच में सरस्वती इलेवन ने हरिज इलेवन के खिलाफ और तीसरे मैच में पाटन इलेवन ने समी इलेवन के खिलाफ जीत दर्ज की। आयोजन टीम की ओर से जिग्नेश पटेल ने कहा कि बाकी मैच आने वाली छुट्टियों में खेले जाएंगे

मां पांडरी पाठ मंदिर वारी में माघ गुप्त नवरात्रि पर हुई घटस्थापना

9 दिनों तक चलेगी विशेष पूजा

रितेश कटरे ब्युरो चीफ पुष्पांजलि टुडे बालाघाट

हिंदू पंचांग के अनुसार, माघ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि 22 जनवरी को रात्रि 02 बजकर 22 मिनट पर शुरू हो रही है। 22 जनवरी को ही रात 10 बजकर 27 मिनट पर प्रतिपदा तिथि का समापन भी है। ऐसे में घटस्थापना आज यानी 22 जनवरी को ही किया जा रहा है। इसी कड़ी में लांजी की खुबसूरत वादियों में बसा ग्राम वारी धाम में विराजित मां पांडरी पाठ माई के मंदिर में मंदिर के संरक्षक रेखलाल कावरे एवं डाक्टर सुधीर दशरिया तथा उपस्थित भक्तों के द्वारा घटस्थापना की गई है। वहीं 9 दिनों तक विशेष पूजा अर्चना की जाएगी। गुप्त नवरात्रि कीप्रतिपदा तिथि को घटस्थापना और मां शैलपुत्री की पूजा की गई वहीं द्वितीया तिथि में मां ब्रह्मचारिणी पूजा, तृतीया तिथि में मां चंद्रघंटा की पूजा, चतुर्थी तिथि में मां कूष्मांडा की पूजा, पंचमी तिथि में मां स्कंदमाता की पूजा षष्ठी तिथि में मां कात्यायनी की पूजा, सप्तमी तिथि में मां कालरात्रि की पूजा, अष्टमी तिथि में मां महागौरी की पूजा, नवमी तिथि में मां सिद्धिदात्री की पूजा एवं दशमी तिथि में नवरात्रि का पारण किया जाएगा।

गुप्त नवरात्रि में ऐसे करें पूजा-माघ माह में पड़ने वाली गुप्त नवरात्रि के नौ दिनों का खास महत्व होता है।

प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष रामनिवास रावत का 63 वां जन्मदिवस संकल्प दिवस के रूप में मनाया

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रामनिवास रावत के जन्मदिवस पर सहभोज कार्यक्रम हुआ संपन्न

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस / कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष रामनिवास रावत पूर्व मंत्री का जन्मदिन शनिवार को हिमांशु पैलेस कैलारस में संकल्प दिवस के रूप में मनाया यहां बता दें कि हिमांशु पैलेस में आयोजित कार्यक्रम ब्लॉक कांग्रेस कमेटी जोरा के अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह सिकरवार चिंटू भैया के नेतृत्व में संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अपने प्यारे नेता का माल्यार्पण कर साफा बांधकर स्वागत किया तत्पश्चात के काटकर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई इस अवसर पर हुई सभा को संबोधित करते हुए ब्लॉक कांग्रेस कमेटी जौरा के अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह ने अपने उद्बोधन में सर्वप्रथम पूर्व मंत्री रावत को जन्म दिवस की बधाई दी और उनके मंगल जीवन की कामना की तत्पश्चात कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष रामनिवास रावत ने उद्बोधन में कहा कि आगामी महीनों में प्रदेश में विधानसभा चुनाव होने हैं इस समय प्रदेश में बेरोजगारी बढ़िया शिक्षा स्वास्थ्य की भी हालत दयनीय है हमें जनता के मुद्दों की लड़ाई अंतिम सिरे तक लड़नी है साथ ही साथ आगामी विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में कमलनाथ जी के नेतृत्व में एक बार फिर से कांग्रेस की सरकार बनानी है अपने जन्म दिवस के अवसर पर रामनिवास रावत ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं का

आभार व्यक्त किया और कहा कि जिस जोश के साथ आप सभी ने अपने अपने क्षेत्रों में भारत जोड़ो यात्रा निकालकर गांव-गांव के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है ठीक उसी प्रकार विधानसभा चुनाव में भी चेहरा कोई भी हो प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए एकजुटता के साथ कार्य करना होगा। इस अवसर पर श्री रावत ने एक संकल्प भी पारित करवाया जिसमें समस्त कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने खड़े होकर प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाने की शपथ ले एकजुटता से संकल्प लिया। प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष के जन्मदिवस पर सह भोज का आयोजन भी रखा गया जिसमें कार्यक्रम में उपस्थित सभी आगंतुकों ने सहभोज का आनंद भी उठाया। कार्यक्रम में कांग्रेस कार्यकर्ता हरी सिंह कुशवाह,केशव प्रसाद गोयनर, बिंदू कुरेशी,मोहन रसोईया,ब्रजमोहन मरैया,प्रहलाद यादव,जीवन लाल त्यागी,अशोक जाटव,शम्मा कुरैशी पार्षद पार्षद, ओमप्रकाश शर्मा,गिर्राज शर्मा,विजेंद्र गोड,राजकुमार सिंघल,राजाराम बंसल, रामबिलास धाकड़,डॉ.धनीराम कुशवाह,ब्रजेश करसोरिया,सतेंद्र सोलंकी,शाहबुदीन खान, विनोद पलैया पार्षद,संतोष सोलंकी, सौरभ कोठरी,सतीश कोशल, एड.धर्मेंद्र सिंह सिकरवार, एड.जगदीश प्रजापति,धर्मेंद्र सिंह सिकरवार,नरेश शर्मा जपथप, ओमप्रकाश टेंगोर,मोनू धाकड़, रानी खान,पार्वती जाटव,तारा सिकरवार,साबिर पठान,भोलू सिकरवार,टिंकू सिकरवार,शिवम सिकरवार, दीपक यादव,सोनू गौड़,विजय नामदेव,हरेंद्र सिंह सिकरवार, बल्लव यादव,सुरेंद्र यादव,पप्पन यादव,पूरन शास्त्री,बादशाह यादव,दीन मोहम्मद,प्रकाश शिवहरे,सहित नगर के समस्त पत्रकार बंधु भी उपस्थित थे।

धम्म देशना एवं बुद्ध वाणी कार्यक्रम हुआ संपन्न

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस । कैलारस नगर क् के ग्राम अंबेडकर मार्ग में आगरा से आए भदंत करुणा शील राहुल भंते के सानिध्य में धम्म देशना एवं बुद्ध वाणी कार्यक्रम चल रहा है। कार्यक्रम का संचालन कर रहे बुद्ध संघ के अध्यक्ष ने भारत- श्रीलंका के ऐतिहासिक संबंध और प्राचीन लिपियों का उल्लेख करते हुए कहा सम्राट अशोक ने 2300 साल पहले अपने पुत्र महेंद्र व पुत्री संघमित्रा को धर्म प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा था। आज भारत में बौद्ध धर्म के अनुयायी घट रहे हैं ऐसे समय में श्रीलंका से भारत में बौद्ध धर्म वापसी हो रही है। सर्वप्रथम आगरा से आए करुणा शील राहुल भंते के कैलारस पधारने पर नगर के लोगों ने बड़ी गर्मजोशी के साथ बौद्ध भंते का स्वागत किया।कार्यक्रम आयोजक भदंत करुणाशील राहुल भंते ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज हम लोग बाबा साहब के मिशन से हटते जा रहे हे हम बाबा साहब की जयंती के नाम पर काफी कुछ खर्चा करते हैं रेलिया निकालते हैं लेकिन बाबा साहब के रास्ते पर चलने का प्रयास नहीं करते बाबा साहब ने बौद्ध धर्म को अपनाया था बाबा साहब ने सर्वप्रथम महिला पुरुष के बीच की खाई को पाटा और महिलाओं को समानता का अधिकार दिलवाया जो मिशन बाबा साहब ने जो सपना और देखा उसे पूरा करने के लिए हमें बौद्ध धर्म अपनाना होगा और बौद्ध धर्म एक धर्म नहीं सच्चाई का मार्ग हे बौद्ध धर्म एक महासागर के समान है जिस प्रकार सागर में सभी नदियों का जल मिल जाता है ठीक उसी प्रकार बौद्ध धर्म के समागम में सब सम हो जाता है समान हो जाता है । भिक्षुओ का स्वागत उपासकों द्वारा किया गया। बुद्ध वंदना के बाद स्वागत गीत द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में आभार प्रदर्शन सुनील मौर्य ने किया इस अवसर पर कार्यक्रम में सतेंद्र सोलंकी बाबूलाल सोलंकी नंदलाल खरे, संतोष सोलंकी सतीश कौशल डॉक्टर जतिन अर्गल,अजय अर्गल, सौरभ कोठारी, जितेंद्र बौद्ध,कदम सिंह दोनेरिया, अतेंद्र बौद्ध प्रहलाद बौद्ध, द्वारिका बौद्ध विवेक दोनेरिया, भारती बौद्ध, कमलेश बौद्ध, गीता बौद्ध, सहित बड़ी संख्या में महिला पुरुष कार्यक्रम में शामिल हुए

भक्तो के कल्याण करने शंकर जी ने समुद्र मंथन से निकले विषपान किया पंडित शत्रुघ्न बालोठिया

डोंगरपुर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा का पांचवा दिन

गौरव शर्मा पुष्पांजलि टुडे

कैलारस देवता एवम देत्यो ने मिलकर समुद्र मंथन किया तो समुद्र मंथन से सबसे पहिले अग्नि की तरह जलता हुआ हलाहल यानी विष निकला जिसे देखकर दानव उसे छोड़ गए और उस विस को देवताओं ने अपने हाथो लिया और भगवान भोले नाथ के पास उस विष को लेकर पहुंचे तब शंकर जी ने भक्तो के कल्याण हेतु विषपान किया उक्त कथा प्रशंग आज डोंगरपुर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के पांचवे दिन कथा व्यास पंडित शत्रुघ्न बालोठिया बिट्टू भईया ने सुनाया कैलारस डोंगरपुर में 18 जनवरी से श्रीमद भागवत कथा का आयोजन जगन्नाथ धाकड़ , सरपंच दर्शनलाल धाकड़ ,एवम जरारिया परिवार द्वारा श्रीमद भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा हे आज पांचवे दिन पंडित शस्त्रुघ्न बलोठिया ,बिट्टू

द्वारा श्री राम कथा एवम श्री कृष्ण जन्मोत्सव की कथा का वर्णन सुनाया और संगीतमयि धूम पर भजनों पर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया कथा श्रवण करने आने बालो के जलपान आदि की व्यवस्था रघुनाथ धाकड़ , रामनिवास धाकड़ , संतोषी लाल धाकड़ ,देवेंद्र कमल सिंह , जितेंद्र, सुमेर सिंह,शैलेंद्र, लोकेंद्र ,सुनील धाकड़ आदि द्वारा की जा रही हे , भागवत कथा श्रवण के लिए प्रतिदिन हजारों की संख्या में धर्म प्रेमी आकार पुण्य लाभ ले रहे हे

दबोह में धूमधाम से मनाया गया गहोई दिवस

सैंकड़ो महिलाओ पुरुषो के साथ निकली गहोई समाज की शोभायात्रा,जगह जगह हुई पुष्पवर्षा

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दबोह नगर में गहोई वैश्य समाज द्वारा गहोई दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।जिस दौरान तय कार्यक्रम के अनुसार सबसे पहले नगर की गहोई धर्मशाला में समाज द्वारा सामूहिक रूप से सुंदरकांड का पाठ किया गया।उसके बाद ध्वजारोहण कर गहोई गान किया गया।तदोपरांत सामूहिक रूप से स्वल्पाहार किया गया।जिसके बाद विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो कि गहोई धर्मशाला से शुरू होकर रीछा मोहल्ला पहुंची फिर वहां से वापस आकर सिंचाई विभाग तक पहुंची तदोपरांत कोंच रोड होते हुए शोभा यात्रा का समापन गहोई धर्मशाला पर हुआ।जिसके बाद उदभोदन कार्यक्रम शुरू हुआ।कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में प्रेम नारायण जी खांताल अध्यक्ष चम्बल क्षेत्रीय गहोई वैश्य महासभा, मदन छिरौलिया,भवानीशंकर नाहर, वरुण कस्तवार सम्पादक गहोई दर्पण मौजूद रहे।वहीं इनके साथ युवाओ में समाज के प्रति अलख जगाने वाले युवा गहोई सेना के संस्थापक समाजसेवी अभय गुप्ता नेताजी भी मुख्य रूप से मौजूद रहे।कार्यक्रम शुरू करने से पहले दीप प्रज्वलित कर अतिथियों द्वारा मैथलीशरण गुप्त(दद्दा जी)के छायाचित्र पर माल्यार्पण किया गया तदोपरांत कार्यक्रम शुरू हुआ।कार्यक्रम में गहोई समाज दबोह के द्वारा मुख्यातिथियो का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।जिसके बाद सामाजिक कार्यक्रमो की शुरुआत हुई जिसमें नगर की गहोई समाज बच्चियों व महिलाओं के द्वारा किसी ने कविताओं का पाठ किया तो किसी ने गहोई समाज को एकजुट रहकर काम करने की बात कही।इसी कडी में गहोई समाज के वरिष्ठ बुजुर्गों का सम्मान समाज के द्वारा किया किया।वहीं कक्षा 10 व 12 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने व्वले बच्चों का सम्मान व राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रतियोगिता परीक्षा में चयनित बालक/बालिकाओं का सम्मान भी गहोई समाज दबोह के द्वारा किया गया।तदोपरांत गहोई दर्पण कलेंडर का विमोचन भी समाज के द्वारा किया गया।जिसके बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।सम्पूर्ण कार्यक्रम में मंच संचालन रजनीश पिपरसैनिया ने किया।हम सब एक और एक दो तो हो चुके हैं पर एक और एक ग्यारह होना बांकी हैं-कोठारी कार्यक्रम में मौजूद दबोह नगर के निवासी इंजी.राकेश कोठारी ने मंच पर सम्बोधित करते हुए पहले तो दद्दा जी को नमन किया तदोपरांत मौजूद सभी को कार्यक्रम की शोभा बड़ाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि वैसे तो गहोई समाज काफी विकसित है परंतु अभी कुछ न कुछ कमी जरूर है।आगे उन्होंने मौजूद सभी गहोई समाज के महिला,पुरुष व युवाओ में जोश भरते हुए कहा कि हम सब एक और एक दो तो हो चुके हैं पर एक और एक ग्यारह होना बांकी हैं इसलिए एकजुट होकर समाज के हित में कार्य करें और समाज को आगे बड़ाने में सहयोग करें

।**गहोई समाज के अध्यक्ष ने किया धन्यवाद ज्ञापित**-गहोई वैश्य समाज अध्यक्ष बलराम सोनी दबोह के द्वारा बताया गया कि इस वर्ष समाज के द्वारा गहोई दिवस ब? ही हर्षोल्लास व ऊर्जा के साथ मनाया गया।जिसमें समाज के पुरुषों सहित महिलाओं ने भी ब?ी संख्या में मौजूद रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया।जिसके लिये उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सपा के संस्थापक सदस्य जनेश्वर मिश्र की पुण्यतिथि मनाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय पर आज दिनांक 22 जनवरी को महान समाजवादी नेता छोटे लोहिया नाम से विख्यात स्वर्गीय जनेश्वर मिश्र पुण्यतिथि तिथि के अवसर पर समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय पर समाजवादी नेता छोटे लोहिया के नाम से प्रख्यात श्रद्धेय जनेश्वर मिश्र की पुण्यतिथि पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर गोष्ठी काआयोजन किया जिलाध्यक्ष नीरज यादव ने श्रद्धेय छोटे लोहिया जी के द्वारा किए गए संघर्षों के बारे में अवगत कराया।समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष नीरज यादव द्वारा उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा की छोटे लोहिया जी आदरणीय स्वर्गीय श्री जनेश्वर मिश्रा जी ने अपना समूचा जीवन समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति की आवाज बनकर कर गरीबों शोषितों के लिए अथक संघर्ष किया उन्हें समाजवादी पार्टी का थिंकटैंक कहा जाता था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद लोहिया जी के आंदोलन में छात्र जीवन से ही सक्रिय भूमिका निभाई और लगातार 4बार सांसद तीन बार राज्यसभा सांसद बनकर मोरारजी देसाई,चौधरी चरण सिंह, विश्वनाथ प्रताप सिंह, एच डी देवगौड़ा ,और इंद्र कुमार गुजराल, के मंत्रिमंडल में वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य किया हम ऐसे महान समाजवादी नेता स्वर्गीय जनेश्वर मिश्रा की पुण्यतिथि पर शत शत नमन करते है हम सब को उनके द्वारा किए गये संघर्षों से प्रेरणा लेने की जरूरत है । पुण्यतिथि पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य श्री हजूरी सिंह बघेल वरिष्ठ नेता देशराज सिंह यादव, जिला उपाध्यक्ष दीपक यादव डीके, राधामोहन सिंह सिमराव, जिलाध्यक्ष यूथ बिग्रेड सूरज बघेल, डॉ कृपाल सिंह कुशवाहा, भिण्ड विधानसभा उपाध्यक्ष अनिल यादव, विधानसभा उपाध्यक्ष अटेर दिनेश यादव, मनोज बघेल, सतेन्द्र सिंह पत्रकार, गप्पे सिंह तोमर,रोहित यादव सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे समाजवादी विचारधारा से प्रेरित होकर आज कांग्रेस झुग्गी झोप?ी प्रकोष्ठ के पूर्व सम्भागीय अध्यक्ष डॉ कृपाल सिंह कुशवाहा ने समाजवादी पार्टी के परिवार में जिलाध्यक्ष नीरज यादव ने शामिल किया।

हार जीत का दाव लगाते हुए 6पकड़े गए एवं एक ताश कि गड्डी ?2660 बरामद

पुष्पांजली टुडे संवाददाता मालनपुर

मालनपुर पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र सिंह चौहान अति पुलिस अधीक्षक कमलेश कुमार खरपूसे के निर्देशन में चलाए जा रहे धरपकड़ अभियान के तहत गोहद एस डी ओ पी सौरभ कुमार के मार्गदर्शन में मालनपुर थाना प्रभारी बलवंत सिंह यादव ने को मूखवीर कि सुचना मिलते ही बंद पड़ी सीमेंट फैक्ट्री में जुआ खेला जा रहा था मालनपुर थाना प्रभारी ने अपने पुलिस बल साथ लेकर के

चारों तरफ से घेराबंदी कर जुगाडीयो को धर दबोचा जिन से बरामद हुई एक ताश की गड्डी 2660 रुपय बरामद किए जिसमें अपराधी वीर सिंह पुत्र हरि सिंह जाटव 20 निवासी वार्ड क्रमांक 10 अनिल पुत्र शंकर 25 साल निवासी पप्पू पुत्र दर्शन लाल शराफत खान पुत्र आसिफ खान उम्र 47 साल निवासी समता नगर मालनपुर सिकंदर पुत्र पप्पू उम्र 27 साल निवासी सीमेंट फैक्ट्री रामवीर सिंह पुत्र मेघनाथ परमार उम्र 42 वार्ड नंबर 12 मालनपुर ए एस आई नारायण सिंह धारिया ने जुआ एक्ट के तहत कार्रवाई कर विवेचना में लिया

कांग्रेस पार्टी ने दिया पिछड़े वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण : मान सिंह कुशवाह

मेहगांव विधानसभा में होगा पिछड़ा वर्ग सम्मेलन:रामप्रकाश यादव

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । आज पिछड़ा वर्ग जिला कांग्रेस के नेतृत्व में जिला स्तरीय बैठक का आयोजन भिंड इटावा चुंगी रामप्रकाश यादव के होटल पर किया गया जिसमें पिछड़ा बर्ग कांग्रेस जिलाध्यक्ष सुभाष राठौर ने उपस्थित हुए कहा आज जिलेभर में पिछड़ा वर्ग की बहुत तादाद संख्या है, जिस की ताकत आगामी समय में जिला सम्मेलन के माध्यम से दिखाए जाने का निर्णय लिया गया और सभी पिछड़ा वर्ग के साथियों ने संकल्प लिया हम सब लोग मिलकर प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनाने में अपनी अहम भूमिका निभाएंगे तथा इसी क्रम में कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मान सिंह कुशवाहा ने कहां पिछड़े वर्ग को 27 परसेंट आरक्षण व राजनीतिक भागीदारी सम्मान देने का काम मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ द्वारा किया गया और कहा नेता प्रतिपक्ष डॉ गोविंद सिंह की अगुवाई में पिछड़ा वर्ग जिले की मेहगांव विधानसभा पर अपना शक्ति प्रदर्शन करने

का काम करेगा इसी क्रम में पिछड़ा वर्ग कांग्रेस के प्रदेश के उपाध्यक्ष राम प्रकाश यादव ने कहां कांग्रेस हमेशा पिछड़े वर्ग की हितेषी पार्टी रही है मैं इस बात का विश्वास दिलाता हूं आगामी समय में पिछड़े बर्ग का मान सम्मान राजनीतिक भागीदारी रखने का काम कांग्रेस पार्टी में किया जावेगा व आप सबकी सुझावों को पार्टी स्तर पर बड़ी मजबूती के साथ रखा जाएगा,इसी क्रम में रणजीत सिंह गुर्जर ने अपनी बात रखते हुए कहा मेहगांव में हमेशा पिछड़ा वर्ग ने कांग्रेस का साथ देने का काम किया तथा पूर्व जिला पंचायत सदस्य राजबीर बघेल ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में वीरेंद्र यादव,वीरेंद्र यादव,जितेंद्र गुड्डू नरवरिया,शिव सिंह नरवरिया, थान सिंह यादव,नरेश राठौर पिंटू राठौर, नगर परिषद अध्यक्ष जगत सिंह यादव सुरेश गुर्जर,चतुर सिंह नरवरिया,राजेंद्र नरवरिया,नारद सिंह कुशवाह,जितेंद्र परजीत लोधी जनपद सदस्य। इत्यादि लोग उपस्थित थे।

नशा मुक्ति अभियान के तहत् विभिन्न गतिविधियों का हुआ आयोजन

पंकज त्रिपाठी
दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । शासन के निर्देशानुसार कलेक्टर डॉ सतीश कुमार एस के निर्देशन में एवं प्रभारी उपसंचालक सामाजिक न्याय के मार्गदर्शन में जिला अंतर्गत नशा मुक्ति अभियान के तहत् विभिन्न गतिविधियों का आयोजन जिले में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं स्कूल, महाविद्यालयों में किया जा रहा है। कार्यक्रम के तहत् किड्स केयर स्कूल हाउसिंग कॉलोनी में नशा मुक्ति अभियान का क्रियान्वयन कैलेंडर अनुसार किया गया। जिसके तहत् प्रथम दिवस नशे के दुष्परिणाम विषय पर समस्त छात्रों का उन्मुखीकरण किया गया।कार्यक्रम में दुनिया में कई तरह के नशे के प्रकारों को बताया गया, शराब, बीडी, तम्बाकू, गुटका ये परम्परागत तरीके हैं किन्तु आजकल अफीम, गांजा और इनके दुष्परिणामों और शरीर पर प?ने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में बाल सरंक्षण अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग अजय सक्सेना द्वारा बताया गया। यह भी बताया गया कि हमारी अर्थव्यस्था का एक बहुत ब?ा भाग नशीले पदार्थों के उपयोग में जाता है, पूरी दुनिया में लगभग 80 बिलियन डोलर का वार्षिक व्यापार इन्हीं नशीले पदार्थों का है अर्थात किसी छोटे देश की जितनी पूरी अर्थव्यवस्था होगी उतना केवल नशीली सामग्री के उपयोग में चला जाता है। जो समुचे विश्व के लिए अलार्मिंग स्थिति है। श्वास, लिवर, आँखें ह्रदय और पूरे शरीर पर नशे के दुष्प्रभाव देखे जाते हैं। नशा न केवल उपयोगकर्ता के लिए हानिकारक है अपितु उससे जु? सभी लोगों, परिवार, समुदाय सभी के लिए अगर कोई बीडी पीता है, तो उसका हानिकारक धुंआ उसके पास सभी के लिए नुक्सान देह होगा। साथ ही इससे परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के साथ-साथ पारिवारिक कलह भी शुरू हो जाती है। हमें किसी भी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिए।इसके बाद किशोर न्याय अधिनियम के प्रावधानों से अवगत कराते हुए बताया गया कि अगर कोई भी दुकानदार 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को नशीले पदार्थ बेचता है अथवा बिचवाता है तो ये दोनों ही अपराध हैं और कानून में सजा का प्रावधान है इसी तरह से मेडिकल स्टोर वाले भी बिना पर्चे के किसी भी 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को दवा नहीं देंगे, इसके लिए जिले में सभी मेडिकल स्टोरों, शराब के ठेकों और गुमटियों पर 卐यहाँ बच्चों को नशीले पदार्थ (बीडी, गुटका, दवा आदि) नहीं बेचे जाते हैं卐 सन्देश प्रसारित है (कैलेंडर, दीवार लेखन) इसके बाद स्कूल के सभी बच्चों ने पाती (एक पत्र जिसमें बच्चे अपने अभिभावकों से नशीले पदार्थ सेवन न करने का अनुरोध कर रहे हैं) हस्ताक्षरित कराई गयी।

पांच दिवसीय कावड़ पद यात्रा ग्राम सर्रा पहुंची

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। बरमान घाट से प्रारम्भ हुई पांच दिवसीय काव? यात्रा के दूसरे दिन राहुल सिंह अध्यक्ष मध्य प्रदेश वेयरहाउसिंग लॉजिस्टिक एंड कॉरपोरेशन कावड़ यात्रा को लेकर ग्राम सर्रा पहुंचे।आपको बता दें कि 151 किलोमीटर कि लम्बी पैदल यात्रा बरमान घाट से देवश्री जागेश्वरनाथ जा रही है और यह छठवीं संकल्प कावड़ यात्रा है जिसके दूसरे दिन माँ नर्मदा और भोलेनाथ के भक्त ग्राम समनापुर के जंगल वाले रास्ते से होते हुये कावड़ भक्त सकुशल ग्राम सर्रा पहुंचे। ग्राम सर्रा में मां नर्मदा जी की आरती के उपरांत, समस्त कावड़ यात्रियों, श्रद्धालुओं के साथ भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम हुआ। दूसरे दिन कि यात्रा का विश्राम ग्राम सर्रा में होगा।

पहलवानों के आंसू

यह घटनाक्रम दुखद ही है कि दुनिया में पदक जीत कर तिरंगा लहराने वाली महिला पहलवान जंतर-मंतर पर लाचार होकर आंसू बहाएं। ज्यादा दिन नहीं हुए जब हरियाणा में एक महिला कोच ने खेल मंत्री पर यौन दुर्व्यवहार के आरोप लगाये थे। यूं भी गाहे-बगाहे विभिन्न खेलों में अपने देश के सपने पूरे करने में लगी महिला खिलाड़ियों के साथ यौन दुर्व्यवहार के मामले सामने आते रहे हैं। लेकिन कोई पारदर्शी व फुलप्रूफ तंत्र नहीं बना, जो प्रतिभाओं की सुरक्षा के लिये कारगर हो। कुश्ती संघ के मुखिया और भाजपा सांसद ब्रजभूषण शरण सिंह पर अंतर्राष्ट्रीय पहलवान विनेश फोगाट, साक्षी मलिक व बजरंग पूनिया आदि ने जो आरोप लगाये हैं, वे गंभीर प्रवृत्ति के हैं, जिनको गंभीरता से लेते हुए निष्पक्ष जांच करवायी जानी चाहिए। यह प्रकरण बताता है कि महिला खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन करने के अलावा किन कठिन परिस्थितियों व दबावों में काम करना होता है, विरोध करने पर उन्हें अपना कैरियर दांव पर लगाना होता है। यह विडंबना ही है कि खेल संघों के निरंकुश व्यवहार तथा महिला खिलाड़ियों के साथ यौन दुर्व्यवहार रोकने के लिये कारगर तंत्र नहीं बनाया गया। हरियाणा में भी महिला आयोग के प्रमुख की तो नियुक्ति हुई है लेकिन संस्था के अन्य सदस्यों का चयन नहीं हो सका है। महिलाओं से यौन दुर्व्यवहार की स्थिति इतनी भयावह है कि महिलाओं की सुरक्षा का जायजा लेने गई दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालिवाल खुद छेड़छाड़ का शिकार हो गईं। दिल्ली में एम्स के पास नशे में धुत एक व्यक्ति ने उनसे बदसलूकी ही नहीं की बल्कि 15 मीटर तक कार में घसीटा भी। यह स्थिति भयावह है। ऐसे में आम महिलाओं की सुरक्षा की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। यह गंभीर स्थिति है। जंतर-मंतर पर इस रक्त जमाती सर्दी में धरने पर बैठी खिलाड़ियों को देखकर स्वाभाविक सवाल उठता है कि देश में कोई तंत्र ऐसा नहीं है जो समय रहते पीड़िताओं की आवाज सुन सके? क्यों सरकार तब जागती है जब पानी सिर के ऊपर से गुजरने लगता है। क्यों राजनेताओं को खेल संघों पर बैठाया जाता है? क्यों ब्रजभूषण कुश्ती संघ के अध्यक्ष पद पर एक दशक से अधिक समय सें काबिज है? निरूसंदेह, कोई भी खेल संगठन हो, उसके कर्ता-धताओं का श्रेष्ठ आचरण बुनियादी शर्त है। इन संगठनों पर वे ही लोग नियुक्त होने चाहिए, जो खेल और खिलाडिध्यों के प्रति संवेदनशील हों। बेशक, सरकार ने कुश्ती फेडरेशन से जवाब मांगा है, लेकिन सरकार की पहल देर से हुई है। वहीं संस्था के अध्यक्ष ऐसे आरोपों से इनकार कर रहे हैं। बहरहाल, आरोपों की हकीकत को जांच के जरिये तार्किक परिणति तक पहुंचाया जाना चाहिए। ऐसी पारदर्शी व्यवस्था स्थापित होनी चाहिए कि खेल संगठन कुछ लोगों की घेराबंदी का शिकार न हों। असली मुद्दा ये भी है कि यदि खेल संगठनों का यही आलम रहा तो लोग अपनी बेटियों के खेलों में भाग लेने से कतराएंगे। जैसा कि बेटियों को पहलवानी के लिये प्रेरित करने वाले बहुचर्चित पहलवान महावीर फोगाट ने भी कहा है कि यदि ऐसी ही स्थितियां रहीं तो मां-बाप अपनी बेटियों को खेलों से दूर रखेंगे। वैसे इस प्रकरण में हरिणाणा की खाप-पंचायतों की पहल सकारात्मक रही है और उन्होंने बेटियों को संरक्षण और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की आवश्यकता की बात कही है। निरूसंदेह यह घटनाक्रम दुःख और चिंता का विषय है। देश में सुनिश्चित होना चाहिए कि खांटी राजनेता खेल संघों पर काबिज न हो सकें। अब इस प्रकरण का न्यायपूर्ण पटाक्षेप हो सके, सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए। आरोपी कितना भी ताकतवर क्यों न हो, सख्त सजा का हकदार हो। इस मामले को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए।

प्राकृतिक खेती किसान के आर्थिक सफलता का जरिया

डॉ नंदकिशोर साह

भारत में खेती का पारंपरिक तरीका भी प्राकृतिक और जैविक खेती ही रहा है, लेकिन हरित क्रांति के बाद किसान रासायनिक खेती की ओर बढ़ते चले गए, जो लगातार जिंदगियों में जहर घोल रही है। देश में बिना रसायन की खेती को बढ़ावा देने और किसान की माली हालत सुधारने के प्रयास के लिए जोर दिया गया है। खेती में लागत कम करने, मनुष्य, मिट्टी और पर्यावरण की सेहत को दुरुस्त रखने के लिए प्राकृतिक और जैविक खेती ही विकल्प है। एक रिपोर्ट के अनुसार जैविक और प्राकृतिक खेती ही लंबे समय के लिए फायदेमंद, टिकाऊ, कम खचीर्ली, क्लाइमेट चेंज से निपटने में सक्षम, पानी की बचत, जैव विविधता और मिट्टी में कार्बन तत्वों की मात्रा बढ़ाने वाली है। किसानों को सबसे अधिक लागत हाइब्रिड बीज और रासायनिक खादों व कीटनाशकों के उपयोग पर आती है। इससे बचाना होगा। किसानों को डर रहता है कि रासायनिक खादों और कीटनाशकों को डालना बंद कर देंगे, तो उनका उत्पादन घट जाएगा। इससे उत्पादन कम नहीं होता, बढ़ते हैं। दुनिया में प्राकृतिक कृषि उत्पादों का एक बड़ा बाजार तैयार हो रहा है। इसके लिए लोग अधिक खर्च

करने को तैयार हैं। दुनिया रासायनिक खाद युक्त कृषि उत्पादों से दूरी बना रही है। प्राकृतिक कृषि किसान को आत्मनिर्भर बनाने एवं उनकी आय बढ़ाने में सहायक है। इससे देश में बड़ा परिवर्तन हो सकता है। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल में जैविक खेती प्रोत्साहित किया जा रहा है। गंगा नदी के किनारे सरकार प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है। इसके लाभ यह होगा कि गंगा किनारे रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को रोककर नदी और गांव को प्रदूषण से बचाया जा सकेगा। हम जो फल, सब्जी और अनाज खा रहे हैं, उनको उगाने और पकाने में इतने रसायनों का इस्तेमाल किया जा रहा है कि इसे खाकर हम दिन प्रतिदिन बीमार होते जा रहे हैं। हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी कमजोर हो रही है। हमारे परिवार को शुद्ध, सात्विक एवं पौष्टिक भोजन कैसे प्राप्त हो? किसानों और गांव के संकट के इस समाधान के लिए ऐसी तकनीक अपनाई जाए, जो किसानों को संतोषजनक आय देने के साथ-साथ पर्यावरण की रक्षा भी करें तथा खेती किसानी की आजीविका को टिकाऊ बनाएं। कृषि लाखों लोगों की आजीविका को बनाए रखने की क्षमता रखती है। यह अर्थव्यवस्था को मजबूत बना सकता है। इसमें पहल से न सिर्फ खेतीहरो का उत्थान होगा, बल्कि उनकी आने वाली पीढ़ी भी स्वस्थ, शिक्षित और समृद्ध होकर देश की आर्थिकी में भागीदार बनेगी। देश एक हरित क्रांति देख चुका है। प्राकृतिक खेती आर्थिक सफलता का भी एक जरिया है। यह धरती मां की सेवा का भी बहुत बड़ा माध्यम है। इससे आप मिट्टी की गुणवत्ता, जमीन की स्वास्थ्य, उसकी उत्पादकता की रक्षा करते हैं। प्राकृतिक खेती को लेकर देश का यह जन आंदोलन भी आने वाले वर्षों में व्यापक रूप से सफल होगा जो किसान इस बदलाव से जितनी जल्द जुड़ेंगे, वह सफलता के उतने ही ऊंचे शिखर पर पहुंचेंगे। जब किसी लक्ष्य को हासिल करने के लिए देशवासी खुद संकल्पबद्ध हो जाते हैं तो उसकी प्राप्ति में कोई रुकावट नहीं आती। न हमें कभी थकान महसूस होती है। किसानों के लिए टमाटर, प्याज, आलू समेत अन्य मौसमी सब्जियों के साथ समस्या और गंभीर है। इस दिशा में सरकार किसानों से उचित लाभकारी मूल्य पर सब्जियां खरीद कर भंडारण कर सकती है। इसके लिए कोल्ड स्टोरेज की संख्या पर्याप्त करनी होगी। फसल नुकसान होने की स्थिति में बीमा योजना की प्रासंगिकता बढ़ी है, लेकिन इसका अनुभव बुरा रहा है। आज सवाल सिर्फ किसानों की मौजूदा आय का नहीं है। उनकी आजीविका के भविष्य और उनके स्वास्थ्य का भी है। यदि खेती किसानी का पर्यावरण तेजी से बिगड़ता रहा, मिट्टी का प्राकृतिक उपजाऊपन नष्ट होता रहा, केंचुए मित्र, कीट और पक्षी लुप्त होते रहे, तो उपज की कीमत बढ़ जाने पर भी कल और गंभीर समस्याएं सामने आने वाली है।

खेलों के पीछे शर्मनाक खेल

प्रियंका सौरभ

देश के जो खिलाड़ी विदेशी सरजमीं पर तिरंगे का मान बढ़ाते आए हैं. उन्हें अपने अधिकारों के लिए जंतर मंतर पर धरना देना पड़ रहा है. क्या ऐसे देश खेलों में आगे बढ़ेगा जहां लगातार खेल दुनिया में यौन उत्पीड़न के विवाद बढ़ते जा रहे हैं. देश को मेडल दिलाने वाले इंसाफ की गुहार लगा रहे हैं. बात हो रही पहलवानों की जो कुश्ती महासंघ से दो-दो हाथ करने उतरे हैं. तो आखिर इस लड़ाई का अंजाम क्या होगा? किसकी सरकार है या किसकी थी, ये मुद्दा नहीं है. सवाल ये है कि महिला प्लेयर के साथ हर फेडरेशन क्रिकेट से लेकर कुश्ती तक, यौन शोषण होता है. मुद्दा महिला खिलाड़ियों की सम्मान एवं मानसिक, शारीरिक सुरक्षा का है. साथ ही फेडरेशन को खिलाड़ियों के लिए एक सुरक्षित जगह बनाने का है.अगर बेटियों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हुई तो महिला खिलाड़ियों में खेल के प्रति रुझान खत्म हो जायेगा. उनका मनोबल गिर जायेगा. महिलाओं की खेलों में भागीदारी कम हो जायेगी. देश की प्रतिष्ठा और महिला खिलाड़ियों की अस्मिता का सवाल है. क्यों राजनीति में दम तोड जाती है प्रतिभाएं, खेलों में राजनीति के सक्रिय होने से प्रतिभावान खिलाड़ियों को दबाया जाता है, खिलाड़ी हमेशा खेल अधिकारियों के दवाब में रहते है. खेलों में मेहनत करने वालों की प्रतिभाएं दबकर रह जाती हैं आवाज उठाने पर खत्म कर दिया जाता है. सर्वोच्च खेलों में पदक विजताओं द्वारा बोर्ड पर ऐसे आरोप और धरने के बाद जांच का आश्वासन देना बोर्ड और सरकार दोनों का चरित्र स्पष्ट कर रहा है. जो बोर्ड है वहीं सरकार है इसलिए सरकार क्या बोर्ड अध्यक्ष को हटाएगी क्या निष्पक्ष जांच होगी. डब्ल्यूएफआई का अध्यक्ष एक सांसद है और भारत के लगभग सभी खेल बोर्डों के अध्यक्ष राजनीतिक व्यक्ति है इसलिए खेलों में विशेष प्रगति और विकास के लिए अध्यक्ष का पूर्व खिलाडी होने की मांग भी जोर पकड़ रही है. वैसे भी ऐसे संघों-संस्थाओं पर राजनेता नहीं, खेल प्रतिभाओं को विराजमान करना चाहिए. इन संस्थाओं में पदाधिकारियों का कार्यकाल भी निश्चित होना चाहिए एवं एक टर्म से ज्यादा किसी को भी पद-भार नहीं दिया जाना चाहिए. भारत के लिये कुश्ती ही एक ऐसा खेल है, जो चाहे ओर्लंपिक हो या राष्ट्रमंडल खेल, सबसे अधिक पदक ले आता है. खिलाड़ियों की फंडेशन नेताओं की नहीं खिलाड़ियों की ही बननी चाहिए. इसमें सीनियर खिलाड़ी होने चाहिए ना कि नेता यह हमारे देश के वह खिलाड़ी है जिन्होंने हमारे भारत देश का नाम चमकाया है. गोल्ड मेडल लेकर आए हैं. इस खेल ने दुनिया में भारतीय खेलों का परचम फहराया है, भारत के खेलों को एक जीवंतता एवं उसकी अस्मिता को एक ऊंचाई दी है. इसके खिलाड़ी अपने जुनून के बल पर विजयी होते रहे हैं. इस तरह दुनिया भर में भारतीय पहलवानों ने देश का खेल ध्वज एवं गौरव को ऊंचा किया है तो ऐसे में अगर कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष और प्रशिक्षकों पर महिला खिलाड़ियों के यौन शोषण का आरोप लग रहा है, तो इससे दुनिया भर में भारत की बदनामी हो रही है. यह एक बदनुमा दाग है, एक बड़ी त्रासद स्थिति है. शर्म का विषय है. धरने पर बैठे यही खिलाड़ी जब पदक जीतकर आते है तब खुद राजनीतिज्ञ इन्हे बुलाकर सबके माइक सेट कर करके मीडिया प्रोपगेंडे के लिए सबकी बड़ी सराहना करते है लेकिन जब ये खिलाड़ी खुद के साथ हो रहे दुर्व्यवहार के खिलाफ धरने पर बैठते है. उस समय बड़ी तत्परता दिखाने वाले राजनीतिज्ञों को सांप सूंघ जाता है ऐसा क्यों? भारत में खेलों एवं खिलाड़ियों की उपेक्षा का लम्बा इतिहास है. खेल संघों की कार्यशैली, चयन में पक्षपात और खिलाड़ियों को समुचित सुविधाएं नहीं मिलने के आरोप तो पहले भी लगते रहे हैं, लेकिन ताजा मामला ऐसा है जिसने कुश्ती महासंघ ही नहीं, बल्कि तमाम खेल संघों की विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं. लड़कियों एवं देश के युवा खिलाड़ियों के साथ गलत व्यवहार करने वाले सांसद को तत्काल उनके पद से हटाकर उनसे इस्तीफा लिया जाए और उसके बाद निष्पक्ष जांच एवं कानूनी कार्यवाही की जाए. जिससे देश के युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास एवं मनोबल देश के ऊपर बना रहे और विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन हो ऐसे जिन्होंने हरकत करने वाले सांसद विधायक मंत्री या अधिकारी कोई भी हो तत्काल उसे उसके पद से हटाकर उस से इस्तीफा ले लिया जाए. यही देश के युवाओं के लिए सही कार्य होगा।

राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दल

भारत की संसदीय लोकतान्त्रिक प्रणाली में मूल रूप से जिस त्रिस्तरीय प्रशासनिक प्रणाली में राजनैतिक दलों की भूमिका निहित है स्थानीय आंचलिक से लेकर क्षेत्रीय व राष्ट्रीय दलों का अपना विशिष्ट महत्व है जिन्हें भारतीय संविधान के तहत अपने दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है और जनमत हासिल करके तीनों स्तर पर सुचारू प्रशासनिक तन्त्र देना होता है। इसमें सबसे ज्यादा महत्व राष्ट्रीय सरकार अर्थात लोकसभा चुनावों के माध्यम से प्राप्त किये गये जनमत का होता है। ये चुनाव सकल राष्ट्र की विविधीकृत सामाजिक व सांस्कृतिक संरचना को सम्बोधित करते हुए एकात्म व मजबूत राष्ट्र के उद्बोधन के साये में होते हैं अतः किसी भी राष्ट्रीय राजनैतिक दल के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि उसका अन्तर्राष्ट्रीय नजरिया क्या है क्योंकि किसी भी देश को वैश्विककाल व परिस्थितियों और राजनीति से जूझते हुए ही अपनी मजबूती व प्रगति की तरफ आगे बढ़ना होता है।

1991 तक भारत में इस मोर्चे पर कोई संकट नहीं था क्योंकि सत्ता में पहुंची सरकार की जो भी विदेश नीति होती थी उसका समर्थन सभी क्षेत्रीय व राष्ट्रीय दल एकमत से किया करते थे। परन्तु इसी वर्ष आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया शुरू होने के बाद विदेश नीति के मोर्चे पर परिवर्तन आना शुरू हुआ विभिन्न राजनैतिक दलों के इस सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न विचार भी सामने आने लगे। ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक गुटों व समूहों के बने नये गठजोड़ों की वजह से हो रहा था। इसका असर भारत की विदेशनीति पर भी पड़े बिना नहीं रह सका और कालान्तर में केन्द्र में सांझा सरकारों का दौर शुरू होने पर कुछ विसंगतियां भी सामने आयीं मगर उन पर सत्तारूढ़ प्रभावी राष्ट्रीय दलों (कांग्रेस व भाजपा) ने अपने-अपने सहयोगी दलों के बीच सहमति बनाकर पार पा लिया। मगर इससे स्पष्ट हो गया कि राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका केवल संख्यात्मक रूप से सत्ता मूलक समीकरण बैठाने में ही हो सकती है उनका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना कोई नजरिया नहीं है। अतः यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि 2024 के लोकसभा चुनावों को देखते हुए देश में विपक्षी एकता के जो प्रयास किये जा रहे हैं उनमें क्षेत्रीय दलों की क्या भूमिका होगी? क्योंकि ये चुनाव विशुद्ध रूप से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर होंगे और इनमें भाग लेने वाले दलों के लिए किसी क्षेत्र विशेष की समस्याओं का मसला न होकर पूरे देश का मसला होगा। क्षेत्रीय स्तर पर हर राज्य की अपनी अलग- अलग समस्याएं हो सकती हैं जिनके निराकरण के लिए प्रादेशिक स्तर पर सरकारों का गठन होता है और वे अपने प्रदेश की भौगोलिक व सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार संविधान द्वारा प्राप्त अधिकारों के अनुरूप इनका निराकरण करती है और अपने राज्य के लोगों के कल्याण के लिए आवश्यक काम करती है परन्तु केन्द्र सरकार उत्तर से लेकर दक्षिण तक व पूर्व से लेकर पश्चिम और मैदानों से लेकर पहाड़ी राज्यों के समग्र विकास के लिए समग्र योजनाएं तैयार करती है और फिर उन्हें राज्य सरकारों के माध्यम से ही लागू करती है। जाहिर है ऐसा करने के लिए सत्ता में पहुंचे राजनैतिक दल का नजरिया भी व्यापक व सर्वग्राही होना चाहिए। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश की समाजवादी या बहुजन पार्टी दक्षिण भारत के तमिलनाडु से लेकर केरल तक के राज्यों के विकास के बारे में किस विकास ढांचे की परिकल्पना कर सकती है जबकि इन पार्टियों की सोच अपने राज्य में जातिगत गोलबन्दी पर आधारित है। यह बेवजह नहीं है कि भारतीय संविधान में कृषि से लेकर शिक्षा व स्वास्थ्य राज्यों के विषय बनाये हैं जिससे प्रादेशिक स्तर पर ही वहां के लोगों की मूलभूत समस्याओं का हल राज्य सरकारें कारगर ढंग से निकाल सकें। इसी प्रकार पूर्व की पार्टी बीजू जनता दल को उत्तर प्रदेश के बारे में क्या ज्ञान हो सकता है? हर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति अलग-अलग है जिसकी वजह से उनकी समस्याएं भी अलग हैं परन्तु जब हम भारत को समग्र रूप में देखते हैं तो इसकी समस्याएं हर प्रदेशवासी के लिए एक समान हैं जो सम्पूर्णता में भारत के विकास और हर क्षेत्र में इसकी प्रगति से सम्बन्धित हैं जिसमें विदेश व्यापार से लेकर विभिन्न देशों के साथ सम्बन्ध भी आते हैं। जाहिर है श्रीलंका के साथ सम्बन्धों को लेकर दक्षिण भारत के राज्यों की अपनी चिन्ताएं हो सकती हैं परन्तु भारत सरकार को इस बारे में सकल वैदेशिक सन्दर्भों में सोचना होता है इसी वजह से विदेशी मामले विशुद्ध रूप से केन्द्र के हाथ में रखे गये हैं। यदि हम इस स्थिति का राजनैतिक रूपान्तरण करें तो भारत में फिलहाल केवल दो राजनैतिक दल ही हैं जिनका समग्रता में देशी व विदेशी मामलों में अपना विशिष्ट व व्यापक नजरिया है। ये दल स्वाभाविक रूप से कांग्रेस व भारतीय जनता पार्टी हैं। कांग्रेस भारत पर साठ साल तक राज कर चुकी है और भाजपा फिलहाल सत्ता में है। अतः क्षेत्रीय दलों के पास राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका निभाने के लिए कोई और विकल्प नहीं बचता है सिवाय इसके कि वे या तो कांग्रेस के छाते के नीचे आयें या भाजपा के साये में रहें। मगर हाल ही में हमने देखा कि कुछ क्षेत्रीय दलों ने तेलंगाना के खम्माम में अपनी अलग खिचड़ी पकाने की कोशिश की। यह कोशिश तीसरे मोर्चे की तर्ज पर ही दिखाई पड़ती है जिसमें दोनों कम्युनिस्ट पार्टियां भी शामिल हुई। भारत में कम्युनिस्ट पार्टी का सैद्धान्तिक विमर्श पूरी तरह गर्त में जा चुका है इस पर राजनैतिक पंडितों अब कोई विवाद नहीं है। अतः ऐसा कोई भी गठबन्धन जिसमें केवल क्षेत्रीय विमर्श को राष्ट्रीय फलक पर फैलाने का प्रयास हो राष्ट्रीय राजनीति में स्थान नहीं बना सकता। पूर्व में भी हमने देखा है कि किस प्रकार क्षेत्रीय दलों ने अपने राजनैतिक हितों के लिए राष्ट्रीय हितों की अनदेखी की है। इसके कई उदाहरण हैं जिनका लेखा-जोखा अवसर आने पर दिया जायेगा।

मेषः-कार्य-पेशे में कुछ नई तब्दीली रुचिकर लगेगी। वर्तमान स्थिति को देखते हुए भविष्य की चिंता बढ़ेगी फिर भी कुछ नये आसार आत्मबल में वृद्धि करेंगे। घर में खुशहाली रहेगी।

बृषभः- अत्याधिक कर्जभार से मन परेशान होगा। कुछ नयी आकांक्षाएं मन को उद्वेलित करेंगी। रोजगार में व्यस्तता संभव। अत्याधिक पारिवारिक जिम्मेदारियां मन को बोझिल करेंगी।

मिथुनः- महत्वपूर्ण दायित्वों की समयानुकूल पूर्ति हेतु मन चिंतित होगा। नई दायित्व अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगे। कानूनी मामलों में कठिनाइयां संभव। तामसिक विचारें पर नियंत्रग्ररखें।

कर्कः- महत्वपूर्ण कार्य के प्रति समुचित साधन व्यवस्था के लिए मन केंद्रित होगा। नई महत्वाकांक्षी योजनाएं बनेंगी किंतु समुचित साधन न होने से पूर्ति में अवरोध होगा। पुराने संबंध के प्रति प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

सिंहः- सगे-संबंधियों के सहयोग से उत्साह का संचार होगा। किसी रचनात्मक कार्य के प्रति रुचि पैदा होगी। पुराने संबंधों के भावनात्मक स्मरण से मन भावुक होगा। राजकीय क्षेत्र कुछ परिवर्तन के आसार बनेंगे।

कन्याः- आलस्य निजी महत्वपूर्ण दावित्वों की पूर्ति में बाधक होगा। मानसिक अवसाद व कार्य-पेशे में अरुचि से आर्थिक संकट की आशंका बनेगी। जीवन साथी के स्वास्य के प्रति सतर्क रहें।

तुलाः- अच्छी कल्पनाएं मन पर प्रभावी होंगी परन्तु अपने मन को लक्ष्य से न भटकने दें। व्यावसायिक क्षेत्र में संबंधों का लाभ उठाएंगे। शिक्षा-प्रतियोगिता की दिशा में प्रयत्न तीव्र होगा।

वृश्चिकः- उच्चस्तरीय लोगों के सानिध्य से मनोबल मजबूत होगा। किसी महत्वपूर्ण कार्य की पूर्ति होने के आसार बनेंगे। शासन-सत्ता से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। भौतिक सुख-साधनों की लालसा बढ़ेगी।

धनुः- समय व स्थिति के साथ अपने स्वभाव में थोड़ा लचीलापन लाने का प्रयास करें। क्षमता से अधिक कार्यों का बोझ से बोझिल होंगे। शिक्षा-प्रतियोगिता के क्षेत्र मे सफलताएं मिलेंगी।

मकरः- आर्थिक सबलता हेतु मन नई युक्तियों पर केंद्रित होगा। कोई अचल सम्पत्ति संबंधी तनाव मन को चिंतित करेगा। पुराने संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। जरूरी कायरे में कतई देरी न करें।

कुंभः- पारिवारिक दायित्वों की समय से पूर्ति हेतु प्रयत्नशील होंगे। अच्छी सोच का लाभ प्राप्त करेंगे। परिजनों के सुख-दुख के प्रति मन में चिंता होगी। किसी महत्वपूर्ण कार्य के प्रति चिंताएं समाप्त होंगी।

मीनः- नये संबंधों के साथ आपकी सहज घुलसशीलता प्रशंसनीय है। कायरें को समयानुकूल पूर्ण करने का प्रयत्न करें। बिना वजह दूसरों की अलोचना न करें। आलस्य कतई न करें।

खेत में गाय जाने के विवाद को लेकर दो पक्षों में चली गोली गोलियां, दोनों पक्षों के 10 लोग घायल, दो ग्वालियर रैफर

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद। गोहद थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पंचायत ऐंचाया के ग्राम पिपरौली में 21 जनवरी की शाम को कप्तान परिहार की गाय राकेश परिहार के खेत में चली गई थी। जिसको लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि 22 जनवरी को सुबह तक शांत नहीं हो सका। सुबह हुए विवाद में लगभग 07 बजे लाठी-डंडों से दोनों पक्षों में मारपीट हो गई। जिसमें एक पक्ष के फरियादी कृष्णा पुत्री मंगल सिंह परिहार उम्र 15 साल ने पुलिस को बताया कि आरोपी मनीष, दीपू, संजय, अंकित, निवासी चौकीदार का पुरा पिपरौली ने भंगी वाला कुआं पर गाली गलौज करते हुए मारपीट कर दी एवं जान से मारने की धमकी दी, जिसमें कृष्णा पुत्री मंगल सिंह एवं राकेश परिहार की लगभग 18 वर्ष की पुत्री दोनों घायल हो गई। वहीं दूसरे पक्ष फरियादी अंकित पुत्र मलखान परिहार उम्र 22 वर्ष निवासी चौकीदार का पुरा पिपरौली ने पुलिस को बताया कि आरोपी राकेश, प्रवेश, जगमोहन और बल्ली ने गाली गलौज करते हुए मारपीट कर दी एवं जान से मारने की धमकी दी। जिसमें अंकित पुत्र मलखान उम्र 22 वर्ष, अवधेश पुत्र रामसिया उम्र

19 वर्ष, वंशी पुत्र माधव सिंह उम्र 42 वर्ष घायल हो गए। जिस पर गोहद पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ मारपीट का क्रॉस मामला दर्ज कर लिया था। तदोपरांत दोपहर के समय अचानक से दोनों पक्षों में गोलीबारी की सूचना पुलिस को मिली जिसमें रामू पुत्र रामसिया उम्र 18 वर्ष आकाश पुत्र रामसिया उम्र 22 वर्ष घायल हो गए जिनमें से रामू परिहार को ग्वालियर रेफर किया गया है। फरियादी के अनुसार रामू परिहार के गोली लगना बताया जा रहा है, वहीं दूसरे पक्ष से विमलेश पुत्री मंगल सिंह परिहार उम्र 16 वर्ष, कालू पुत्र राकेश परिहार उम्र 16 वर्ष, पूरन परिहार घायल हो गए। जिसमें से पूरन परिहार को ग्वालियर रेफर किया गया है। वही समाचार लिखे जाने तक दोपहर में गोली चलने के विवाद का मामला दर्ज नहीं हुआ था। जबकि गोली चलने का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। जिसकी पीपुल्स समाचार पुष्टि नहीं करता

पिपरौली गांव में शाम को खेत में गाय जाने को लेकर विवाद हो गया था जिसमें दोनों तरफ के लोग घायल हो गए थे। दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है दोपहर में गोली चलने की सूचना मिली थी जिस पर विवेचना जारी है।

आरकेएस राठौर प्रभारी एसडीओपी गोहद

हिंदू जागरण मंच ने श्याम मानव का किया पुतला दहन

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। बागेश्वर धाम के गुरु श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर नागपुर के श्याम मानव द्वारा की गई टिप्पणी से आक्रोशित होकर हिंदू जागरण मंच ने शहर के अस्पताल चौराहे पर पुतला दहन किया एवं विरोध करने वालों का मुंह काला करने की दी चेतावनी। मंच के सदस्यों ने बताया कि 3 जनवरी से 11 जनवरी 2023 तक बागेश्वर धाम के गुरु श्री धीरेंद्र कृष्णा शास्त्री द्वारा श्री राम कथा का आयोजन नागपुर में किया गया। जिसमें लाखों सनातन धर्मियो ने राम कथा सुनकर धर्म लाभ अर्जित किया। इसी कार्यक्रम में 2 दिन का दरबार भी लगाया गया जिसमें कई लोगों की परेशानियों का समाधान गुरुजी ने अपनी दिव्य शक्ति से किया। 7 दिवसीय राम कथा के समापन के बाद नागपुर के वामपंथी श्याम मानव द्वारा गुरु को चैलेंज करते हुए उन्हें पाखंडी और अंधविश्वासी जैसे शब्दों का उपयोग किया गया। जिससे पूरे सनातन समाज और बागेश्वर धाम वाले गुरु के भक्तों में रोष व्याप्त हुआ। हिंदू जागरण मंच जिला दमोह के तत्वाधान में श्याम मानव का पुतला दहन किया गया एवं जम कर नारे बाजी कि गयी इस अवसर पर हिंदू संगठन के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में भीमराव अंबेडकर चौराहे पर एकत्रित हुए और पुतला दहन करने के पहले चप्पलों से मार मार कर श्याम मानव रूपी पुतले को तिरस्कृत कर, पुतला दहन किया और दमोह जिले में बागेश्वर धाम वाले गुरुजी पर की जा रही अनर्गल टिप्पणी के खिलाफ रोष व्यक्त करते हुए चेतावनी दी कि कोई व्यक्ति सनातन धर्म के संत श्री बागेश्वर धाम पर अनर्गल टिप्पणी करता है तो उसपर पुलिस कार्रवाई और संगठन के सदस्यों द्वारा मुंह काला किया जाएगा। प्रदर्शन करने वाले मंचों के सदस्यों में मुख्य रूप से सूर्यकांत द्वेवेदी,कृष्णा तिवारी, नित्या प्यासी, आशीष शर्मा, दीपक नेमा, उमेश मराज, निशांत तिवारी, विधान पाराशर, विष्णु चौहान, विमल यादव, बेच बर्दिया, जयपाल,शुभम तिवारी, राहुल पटेल, सोनू ठाकुर, प्रशांत राजपूत, सुमित गुप्ता, अंशु रैकवार, तरुण रैकवार, सूरज रैकवार, नयन जैन, रोहित जैन, राम दुबे शामिल रहे।

आनंद उत्सव कार्यक्रम के तहत रंगोली प्रतियोगिता संपन्न

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। ग्राम पंचायत बांसा कला में 22 जनवरी 2023 को आनंद उत्सव कार्यक्रम के तहत सरपंच यतेन्द्र सिंह बांक?ा, सचिव असगर खान के नेतृत्व में रंगोली प्रतियोगिता कार्यक्रम सरस्वती शिशु मंदिर माध्यमिक विद्यालय बांसा कला में प्राचार्य देवी सिंह राजपूत, मुख्य रूप से पुष्पेन्द्र सिंह बांक?ा आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ । इस अवसर पर ग्राम पंचायत बांसाकला के सरपंच यतेन्द्र सिंह बांक?ा ने बताया कि 22 जनवरी से 24 जनवरी 2023 तक निरंतर ग्राम पंचायत बांसा कला एवं सम्मिलित ग्राम नदरई, इमलिया घोना, बांसा कला के प्रतिभागियों की उपस्थिति में आनंद उत्सव के तहत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम वैष्णवी ठाकुर, ज्योति पटेल, द्वितीय ओजस्विनी सोनी, दीपिका प्रजापति, तृतीय पूनम प्रजापति, रिया प्रजापति आदि ने प्राप्त किया। इस अवसर पर मुख्य सहयोग सामाजिक संस्था नेहरू युवा नव जागृति नव युवक मंडल बांसा कला के अध्यक्ष एवं सदस्यों और ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति बांसा कला का रहा। सामाजिक संस्था नेहरू युवा नव जागृति नव युवक मंडल बांसा कला के अध्यक्ष घनश्याम पटेल ने बताया की आनंद उत्सव कार्यक्रम के तहत खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा।जिसमें खो खो, वॉलीबॉल, 200 मीटर दौ?, रस्साकसी एवं गोला फेंक प्रतियोगिता छात्र-छात्राओं के बीच होगी। 24 जनवरी को सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित होगा।इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा स्वयं सेवक बसंत पटेल, ग्राम शिक्षा समिति से अवधेश राय, सेवक प्रजापति, प्रकाश प्रजापति, भोलाराम पटेल, देवकीनंदन सिंह ठाकुर, शंभू सिंह ठाकुर, अभिषेक सिंह ठाकुर, अरविंद सिंह ठाकुर, हर्षराज सिंह ठाकुर, सहित ब?ी संख्या में छात्र छात्राओं की उपस्थिति रही।

जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा हाथ से हाथ जोड़ो अभियान को लेकर बैठक संपन्न

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में जिले के समस्त ब्लाक अध्यक्षों, उपब्लाक अध्यक्ष, मंडल सेक्टर अध्यक्षों की बैठक जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनु मिश्रा के निवास पर आयोजित की गई।इस बैठक के मुख्य अतिथि जिला कांग्रेस कमेटी के सहप्रभारी पवन पटैल ने उपस्थित समस्त कार्यकर्ताओं से आहवान किया कि जिले को छो?कर आपसी सामंजस बनाकर जनता के बीच जाये और कांग्रेस पार्टी की रीति नीति से अवगत कराये। जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष मनु मिश्रा ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव कमलनाथ एवं हम सभी कि प्रतिष्ठा का सवाल है ऐसे में चारों विधानसभा में जो भी कांग्रेस नेता टिकिट की दावेदारी कर रहा है वह यह वचन दे कि टिकिट किसी को भी मिले वह बगावत नहीं करेंगा। यह वचन पत्र उसे पार्टी के कार्यकर्ताओं के सामने देना होगा। पूर्व विधायक प्रताप सिंह, गौरव पटेल, मानक पटेल, सतीश जैन, बाबूलाल पटैल, परम यादव, भगवान दास चौधरी, राव ब्रजेन्द्र

सिंह, नितिन मिश्रा, गोविन्द भायल, प्रफुल्ल श्रीवास्वत, प्रदीप पटेल, विधाराम वर्मा ने भी कहा कि हाथ से हाथ जोड़ो अभियान का प्रारंभ 26 जनवरी गणतंत्र दिवस से प्रत्येक ब्लाक में पंचायतों में एवं नगर केक समस्त वार्डों में किया जायेगा। इस अभियान को पम्पलेट एवं प्रचार प्रसार के साथ मजबूती प्रदान करें । जिले के समस्त ब्लाकों हटा से धनश्याम यादव, प्रदीप खटीक पटेरा से हेमंत पटेल, देवेन्द्र ताम्रकार, पथरिया से प्रदीप पटेल, बटियागढ से राजकुमार लोधी, जबेरा से नीरज जायसवाल, गोविन्द तिवारी, संतोष रजक, तेन्दूखे?ा से रघुनाथ यादव द्वारका सिंह, अमिता सिंह, अजय जाटव, खिल्लू ठाकुर ने भी विचार रखते हुए कहा कि वह सभी पार्टी के निर्देशों का पालन करेंगे साथ ही वह जब अपने क्षेत्र का दौरा करते है तो आमजनता का कहना है कि पिछली बार ही उन्होने कांग्रेस की सरकार चुनी थी किन्तु कांग्रेस के ही जयचंदों ने अपने स्वार्थ की खातिर सरकार गिरा दी थी किन्तु इस बार पूर्ण बहुमत कि ही कांग्रेस सरकार होगी। इस अवसर पर समस्त ब्लॉक अध्यक्षों, मंडल सेक्टर अध्यक्षों की उपस्थिति रही।

मायूस माँ के चेहरे पर आयी खुशी

जब बेटी के चेहरे को देखा तो खिल उठी मुस्कान

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

पहलें

बाद

दमोह।जिले की सीमा के अंतिम छोर पर बसा हटा ब्लॉक का एक गांव खमरगौर जिसमें सब सेंटर पर दिसंबर 20 में जन्मी आकांक्षा जिसे देखते ही उसकी मां बेहद विचलित हो उठी। बच्ची का ऊपर का होंठ कटा हुआ था, तालु में छेद था। बच्ची को देखते ही मां के मन में असीम पीड़ा हुई और विचार आया कि इस बच्ची का भविष्य अब कैसे व्यतीत होगा। दुखी मन से मां ने नर्स से सवाल किया कि मेरी बेटी का क्या होगा? वहीं पास खड़ी आशा कार्यकर्ता सतीला सिंह ने दुखियारी मां से कहा कि आप दुखी ना हो,आपकी आर्थिक स्थिति से एवं बच्चे के स्वास्थ्य में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं आने दिया जाएगा। मां ने जब यह बातें सुनी तो संतोष की ठंडी सांस लेकर कहा कि काश आपकी बातें सच हो और मेरी बेटी भी एक दिन मुस्करा पाए।आशा कार्यकर्ता ने ग्राम खमरगौर द्वारा डॉक्टर सचिन अग्रवाल आरबीएसके टीम हटा को इस संबंध में बताया गया तब जाकर डॉक्टर ने बच्ची को देखा एवं समझाइश दी की बच्ची का वजन 5 किलो जब हो जाएगा तब इसका ऑपरेशन जबलपुर में करवाने की लिए डीईआईसी दमोह के मैनेजर नरेश राठौर से संपर्क करके आवश्यक कार्यवाही द्वारा यह कार्य बड़े सहज तरीके से करवा लिया जायेगा। आकांक्षा का वजन जब 5 किलो पहुंचा तो उसे 17 फरवरी 22 को आवश्यक कार्यवाही डीईआसी दमोह द्वारा करके दुबे सर्जिकल अस्पताल जबलपुर भेजा गया। जिसमें बच्ची के ओंठ का ऑपरेशन करके सामान्य ओंठ की तरह किया गया। इसके पश्चात 26 मई 22 को द्वितीय ऑपरेशन तालु के छेद को बंद करने के लिए किया गया जो कि सफल रहा। खमरगौर की रेखा साहू की बच्ची आकांक्षा के दोनों सफल ऑपरेशन तथा सारी व्यवस्था शासन के नियमानुसार की गई। इस प्रकार जिला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संगीता त्रिवेदी के कुशल मार्गदर्शन में स्वास्थ्य विभाग के सतर्क समझदार अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा शासकीय योजना को मूर्त रूप में लाकर पीड़ित मानवता की सेवा की, जिसकी सराहना पूरा गांव आज कर रहा है। टीम जब आकांक्षा के घर पहुंची तो हम लोगों को देखकर आकांक्षा मुस्कुरा उठी। स्वास्थ्य टीम ने वह मंजर भी देखा था जब उसका विकृत चेहरा हमारी आंखों के सामने घूम गया। मुस्कुराहट पर ऐसा लगा जैसे पूरी कायनात मुस्कुरा रही हो।आकांक्षा का परिवार राज्य शासन के मुखिया मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद देते हुये कहते हैं शासन की योजना ने हमारी आकांक्षा के चेहरे पर मुस्कुराहट ला दी। आभारी है, हम आज बेटी की मुस्कुराहट देखने के लिए स्वाथ्य टीम ने जो प्रयास किए हैं। हमारा परिवार आप सभी एवं सरकार का सदा आभारी है। स्वास्थ्य विभाग की टीम से सीबीएमओ डॉ.आरपी कोरी, डॉक्टर सचिन अग्रवाल,भरत जैन फार्मासिस्ट आरबीएसके, अरविंद कुमार नेमा नेत्र चिकित्सा सहायक, मिथिलेश सिंह आशा सुपरवाइजर, सतीला सिंह आशा कार्यकर्ता खमरगौर शामिल थे।

मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत युवाओं ने ली शपथ

बिना लोग प्रलोभन शत-प्रतिशत मतदान का लिया संकल्प

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह। निर्वाचन आयोग के निर्देश पर 25 जनवरी 2023 को आयोजित होने वाले 13 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के उपलक्ष्य में नवांकुर संस्था छात्र क्रांति दल एवं छात्र सर्व कल्याण समिति जिला दमोह द्वारा मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद जिला दमोह के समन्वयक सुशील कुमार नामदेव के मार्गदर्शन में विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं को शासकीय ज्ञानचंद्र श्रीवास्तव स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह में उपस्थित विद्यार्थियों को मतदाता जागरूकता अभियान की शपथ दिलाई गई7 जिला समन्वयक सुशील कुमार नामदेव ने कहा कि मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत आज सभी छात्र छात्राओं को मतदान करने हेतु शपथ दिलाई गई है सभी ने संकल्प लिया गया है कि वह पुर्ण ईमानदारी के साथ अपने मताधिकार का प्रयोग सभी निर्वाचन में करेंगे7 यूथ अचीवर्स कृष्णा पटैल ने बताया कि मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत संस्था द्वारा अनेक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं

इसी क्रम में आज बीएसडब्ल्यू एवं एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राओं के बीच पहुंचकर उन्हें मतदाता जागरूकता अभियान की शपथ दिलाई गई है उपस्थित सभी छात्र-छात्राओं ने बिना किसी लोग प्रलोभन शत-प्रतिशत मतदान करने का संकल्प लिया है हमारे देश में आधे से अधिक आबादी युवाओं की है इसलिए युवाओं को सुनिश्चित करना होगा कि वह अपने मताधिकार का का प्रयोग निष्पक्ष ढंग से करें।इस दौरान संस्था अध्यक्ष एवं यूथ अचीवर्स कृष्णा पटैल, पाठ्यक्रम के मेंटर शिक्षक सपना राजपूत, जीतू दुबे, राहुल खरे, दयाराम पटैल, राजकुमार सेन, शैलेश कुमार दुबे, छात्र शुभम पटैल,लोकेश रोहितास,अमित कटारया, सहित संस्था के पदाधिकारियों एवं छात्र छात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति रही7

बड़े-बड़े शहरों में होने वाले ऑपरेशन का लाभ अब, जबलपुर शहर में करा सकेंगे आसपास के लोग

बुंदेलखंड में भी बिना ऑपरेशन के पथरी निकालने का होगा सफल इलाज,जबलपुर के जाने-माने न्यूरोलॉजी पथरी एक्सपर्ट डॉक्टर अंकित फुसकेले एवं डॉ श्रद्धा खंडेलवाल ने बताया

रीतेश अवस्थी
पुष्पांजली टुडे

दमोह।इंडियन मेडिकल एसोसिएशन दमोह एवं फुसकेले स्टोन एंड लेजर सेंटर के संयुक्त तत्वाधान में दिनाँक 21/01/2023 (शनिवार) को विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया7 आईएमए के अध्यक्ष डॉक्टर डी. एम. संगतानी एवं सचिव डॉक्टर विनोद कुकरेजा ने बताया कि जबलपुर के सुप्रसिद्ध यूरोलॉजिस्ट एवं पथरी रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अंकित फुसकेले एवं दूरवीन सर्जन डॉक्टर श्रद्धा खंडेलवाल के व्याख्यान का कार्यक्रम दमोह में किया जा रहा हैं। इस व्याख्यान मे पथरी इलाज़ की नवीनतम पद्धति पर परिचर्चा पत्रकारों के साथ कि गई। पत्रकारों के सवालों के जवाब देते हुए डॉक्टर द्वारा बताया गया कि अब बड़े से बड़े रूप की पथरी मामूली लेजर पद्धति से निकाल दी जाती है अभी तक लोग ऑपरेशन के डर से पथरी नहीं निकलवाते थे और पीड़ा सहते रहते थे लेकिन अब मध्य प्रदेश के जबलपुर में भी अब नागपुर, बेंगलुरु, चेन्नई, जैसी सुविधाऐ वरिष्ठ डॉक्टरों कि टीम के द्वारा पथरी निकाली जाती है। जिसका लाभ आपके शहर दमोह से लेकर पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र को भी मिल सकेगा। डॉ. अंकित फुसकेले ने बताया कि इनका अस्पताल जबलपुर है जहां पर लोग अपनी पथरी निकलवा सकते हैं और इलाज के लिए प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना जैसी मूलभूत योजनाओ का लाभ अस्पताल में है उन्होंने बताया कि छोटे रूप में होने वाली पथरी को दवाइयों के इलाज से भी निकाला जा सकता है यह जरूरी नहीं कि इसके लिए ऑपरेशन ही करना पड़े। मरीज को ज्यादा परेशानी एवं पथरी ब? होने कि स्थिति में ऑपरेशन को आधुनिक मशीनों द्वारा लेजर पद्धति से पथरी को निकाला जाता है जिसमें मरीज को किसी प्रकार का दर्द नहीं होता है और पथरी निकाल दी जाती है।

भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी कर्नाटक में संपन्न

महिला मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में छत्तीसगढ़ महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शालिनी राजपूत सहित महिला मोर्चा के पदाधिकारी शामिल हुए

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय महिला मोर्चा की कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक आज कर्नाटक के तुमकुर में संपन्न हुई। बैठक में भाग लेने भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री मति पूजा विधानी जी प्रदेश अध्यक्षश्रीमती शालिनी राजपूत, महामंत्री श्री मति विभा अवस्थी महामंत्री श्री मति चंपादेवी पवले एवं पूर्व प्रदेश महिला मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमती पूजा विधानी भी उपस्थित रही हैं। राष्ट्रीय कार्यसमिति के बैठक के प्रथम दिन भारत के सभी प्रदेश के भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष एवं महामंत्री उपस्थित रही है। भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक में आगामी कार्यक्रमों की जानकारी और रूपरेखा प्रदान की की गई। भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दूसरे दिन छत्तीसगढ़ भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती शालिनी राजपूत जी ने पिछले 1 साल में भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा छत्तीसगढ़ के द्वारा किए गए सभी कार्यक्रम आंदोलन धरना और साल भर के कार्यो का प्रस्तुतीकरण किया। इस दौरान उन्होंने बताया कि 11 नवंबर को भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा द्वारा छत्तीसगढ़ प्रांत के ही बिलासपुर जिले में महतारी हुंकार रैली आयोजित की गई जिसमें प्रदेशभर की भाजपा महिला मोर्चा के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रही, उन्होंने जानकारी दी महिला मोर्चा के सभी कार्यकर्ता राज्य में भूपेश सरकार में महिलाओं के उत्पीड़न के विरोध में संघर्ष कर रही हैं व महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए तत्पर होकर कार्य कर रही है।

रोनाल्डो के शानदार प्रदर्शन के बाद कोहली ने आलोचकों पर साधा निशाना, लिखा- अब चुप बैठे हैं

नई दिल्ली। फीफा विश्व कप के बाद क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने अपना पहला मैच लियोनल मेसी की टीम पीएसजी के

खिलाफ खेला। रियाद 11 के लिए खेलते हुए रोनाल्डो ने दो गोल किए। उन्होंने पूरे मैच में शानदार प्रदर्शन किया और अंत में प्लेयर ऑफ द मैच भी बने। हालांकि, यह एक दोस्ताना मैच था। रोनाल्डो के दो गोल के बावजूद उनकी टीम 4-5 के अंतर से मैच हार गई। रियाद 11 में रोनाल्डो के नए क्लब अल नस्र और उसके प्रतिद्वंद्वी क्लब अल हिलाल के खिलाड़ी शामिल थे। वहीं, पीएसजी की टीम में लियोनल मेसी, किलियन एम्बाप्पे और नेमार जैसे स्टार खिलाड़ी शामिल थे। रोनाल्डो के शानदार प्रदर्शन के बाद भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने आलोचकों पर निशाना साधा है। कोहली ने कहा है कि ये आलोचक खबरों में आने के लिए रोनाल्डो जैसे खिलाड़ियों की आलोचना करते रहते हैं और अब आराम से चुप्पी साधे बैठे हुए हैं। पीएसजी के खिलाफ मैच में रोनाल्डो चोटिल हो गए थे। उनके चेहरे पर सूजन भी थी, लेकिन वह दो गोल करने में सफल रहे। रोनाल्डो ने अपने दम पर रियाद 11 को मैच में बनाए रखा। उनके अलावा दो गोल अन्य खिलाड़ियों ने भी किए, लेकिन चौथा गोल काफी देरी से आया और तब तक रियाद 11 की हार तय हो गई थी। रोनाल्डो के शानदार प्रदर्शन पर विराट ने अपने इंस्टाग्राम पर स्टोरी लगाते हुए लिखा वह 38 साल की उम्र में भी सर्वश्रेष्ठ काम कर रहे हैं। फुटबॉल विशेषज्ञ सभी का ध्यान आकर्षित करने के लिए हर हफ्ते बैठते हैं और उनकी आलोचना करते हैं, अब आसानी से शांत हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने दुनिया के शीर्ष क्लबों में से एक के खिलाफ इस तरह का प्रदर्शन किया है। जबकि वह तो खत्म हो चुके थे। कोहली पहले ही साफ कर चुके हैं कि वो रोनाल्डो के बहुत बड़े फैन हैं और फिटनेस के प्रति रोनाल्डो के जुनून से कोहली काफी प्रेरणा लेते हैं। रोनाल्डो की तरह विराट कोहली भी तीन साल तक खराब फॉर्म से जूझते रहे। उनके बल्ले से शतक नहीं निकल रहे थे। वह मैच जिताऊ पारियां नहीं खेल रहे थे। हालांकि, उन्होंने इस दौरान अपनी फिटनेस से समझौता नहीं किया और अफगानिस्तान के खिलाफ अपना पहला टी20 शतक लगाकर शानदार वापसी की। इसके बाद उन्होंने बांग्लादेश और श्रीलंका के खिलाफ भी शतक लगाए। अब वह लय में लौट चुके हैं और वनडे विश्व कप में उनसे कमाल की उम्मीद है।

न्यूजीलैंड से घर में सातवीं सीरीज जीतने उतरेगा भारत, रोहित कर सकते हैं बदलाव

रायपुर। भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे वनडे मुकाबले में जीत के साथ तीन मैचों की घरेलू सीरीज अपने नाम करना चाहेगी। पहले मैच में भारतीय टीम ने शुभमन गिल के दोहरे शतक की मदद से 12 रन से जीत हासिल की थी। न्यूजीलैंड की टीम ने 350 के लक्ष्य का पीछा करते हुए जबर्दस्त जुझारू क्षमता दिखाई। एक समय मेहमान टीम ने 131 रन पर छह विकेट खो दिए थे लेकिन उसके बाद टीम और 206 रन बनाने में सफल रही। गेंदबाज मोहम्मद सिराज की गेंदबाजी से भारत मैच जीतने में सफल रहा। भारत का वनडे सीरीज में न्यूजीलैंड के खिलाफ दबदबा 34 साल से जारी है। न्यूजीलैंड ने पहली बार वनडे सीरीज के लिए 1988 में दौरा किया था। उसके बाद से लगातार भारत ने छह सीरीज जीती हैं। लय में शुभमन गिल युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने अकेले दम भारत को विशाल स्कोर बनाने में मदद की। इससे पहले श्रीलंका के खिलाफ सीरीज में विराट कोहली ने शानदार प्रदर्शन किया था। हार्दिक पंड्या को एक बार फिर बल्ले से अच्छा योगदान करने की जरूरत है। मध्यक्रम में ईशान किशन हैदराबाद में नहीं चल पाए थे लेकिन बांग्लादेश के खिलाफ दोहरा शतक बना चुके ईशान इस मौके पर बड़ा स्कोर करना चाहेंगे। सलामी बल्लेबाजी में कप्तान रोहित शर्मा शुरूआत तो अच्छी कर रहे हैं लेकिन उसे बड़ी पारी में परिवर्तित नहीं कर पा रहे हैं। शार्दुल और उमरान में होड़ भारतीय टीम ने तेज गेंदबाज उमरान मलिक की जगह शार्दुल ठाकुर को मौका उनकी बल्लेबाजी योग्यता को देखते हुए किया है। अब यह प्रबंधन को तय करना है कि उसे एक ऐसा गेंदबाज चाहिए जो बल्लेबाजी भी कर सकता है, या ऐसे विशुद्ध तेज गेंदबाज की जरूरत है जो अपनी गति से पारी के मध्य में विकेट निकाल सकता है। मोहम्मद सिराज पारी में कभी भी गेंदबाजी कर सकते हैं। शमी नई गेंद से ज्यादा कारगर हैं। हार्दिक कुछ ज्यादा खचीर्ले रहे हैं। कुलदीप-चहल की उतर सकती है जोड़ी स्पिन विभाग में वॉशिंगटन सुंदर के लिए पिछला वनडे याद करने योग्य नहीं रहा जबकि कुलदीप यादव अपना प्रभावी प्रदर्शन जारी रखना चाहेंगे।

न्यूजीलैंड के खिलाफ करो या मरो मैच में भारत की अग्रिम पंक्ति को दिखाना होगा दम

भुवनेश्वर। वेल्स की अपेक्षाकृत कमजोर टीम के खिलाफ लचर प्रदर्शन करने के कारण क्वार्टर फाइनल में सीधे प्रवेश करने में नाकाम रही भारतीय टीम को एफआईएच पुरुष हॉकी विश्व कप में अगर अपनी संभावनाएं जीवंत रखनी है तो उसे रविवार को यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले क्रॉसओवर मैच में हर हाल में जीत दर्ज करनी होगी। भारत को सीधे क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने के लिए पूल डी के अपने अंतिम मैच में वेल्स पर आठ गोल के अंतर से जीत दर्ज करने की जरूरत थी लेकिन भारतीय फॉरवर्ड अच्छा खेल नहीं दिखा पाए और भारत आखिर में यह मैच 4-2 से ही जीत पाया। भारत को अब क्वार्टर फाइनल में पहुंचने के लिए न्यूजीलैंड को हर हालत में हराना होगा जो पूल सी में तीसरे स्थान पर रहा था। भारत अभी विश्व रैंकिंग में छठे स्थान पर जबकि न्यूजीलैंड 12वें स्थान पर है। न्यूजीलैंड की टीम अभी तक कभी विश्वकप के सेमीफाइनल में नहीं पहुंची है। उसने टूर्नामेंट में अभी तक कोई खास प्रदर्शन नहीं किया है और ऐसे में कलिंग स्टेडियम में होने वाले मैच में भारतीय टीम जीत के प्रबल दावेदार के रूप में शुरूआत करेगी। मिडफील्डर हार्दिक सिंह के चोटिल होने के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो जाने से भारत को करारा झटका लगा है। हार्दिक इंग्लैंड के खिलाफ 15 जनवरी को खेले गए मैच के दौरान चोटिल हो गए थे। भारतीय अग्रिम पंक्ति पहले ही संघर्ष कर रही है और ऐसे में हार्दिक का चोटिल होना उसके लिए बड़ा झटका है। भारत यदि न्यूजीलैंड को हरा देता है तो क्वार्टर फाइनल में उसका सामना मौजूदा चैंपियन बेल्जियम से होगा। स्पेन के खिलाफ भारत की जीत में अकेले दम पर गोल दागने वाले हार्दिक की जगह राजकुमार पाल को टीम में लिया गया है। हार्दिक वेल्स के खिलाफ मैच में नहीं खेल पाए थे। इंग्लैंड और स्पेन ने वेल्स को करारी शिकस्त दी थी लेकिन भारतीय टीम

को उसके खिलाफ संघर्ष करना पड़ा क्योंकि अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पाए थे। वेल्स के खिलाफ मैच में भारत शुरू से ही अपनी रणनीति के अनुसार नहीं चल पाया। अग्रिम पंक्ति के अलावा रक्षापंक्ति भी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाई और उसने उस टीम के खिलाफ दो गोल गंवाए जो विश्व रैंकिंग में 14वें स्थान पर काबिज है। हार्दिक सिंह की अनुपस्थिति में मनदीप सिंह और आकाशदीप जैसे खिलाड़ियों का प्रदर्शन भारत के लिए अहम होगा। भारत निश्चित तौर पर इस मैच में जीत के प्रबल दावेदार के रूप में शुरूआत करेगा लेकिन न्यूजीलैंड की टीम को किसी भी मायने में कम करके नहीं आंका जा सकता है। भारत ने पिछले साल अक्टूबर-नवंबर में इसी मैदान पर न्यूजीलैंड को एफआईएच प्रो लीग के दो मैचों में 4-3 और 7-4 से हराया था। न्यूजीलैंड को हालांकि कड़ी चुनौती पेश करने वाली टीम माना जाता है। भारतीय कोच ग्राहम रीड ने भी कहा कि न्यूजीलैंड को कम करके नहीं आंका जा सकता है। रीड ने कहा कि न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच आसान नहीं होगा। एफआईएच प्रो लीग के पहले मैच में उन्होंने कड़ी चुनौती पेश की थी हालांकि दूसरा मैच थोड़ा आसान रहा था। हमें अपना सर्वश्रेष्ठ खेल खेलना होगा। इन दोनों टीम के बीच अभी तक कुल 44 मैच खेले गए हैं जिसमें से भारत ने 24 में जीत दर्ज की जबकि 15 मैचों में उसे हार का सामना करना पड़ा।

शरण को WFI अध्यक्ष पद से हटने के लिए कहने के बाद पहलवानों ने विरोध प्रदर्शन बंद कर दिया

नई दिल्ली। दिल्ली के जंतर-मंतर पर दो दिन से प्रदर्शन कर रहे पहलवानों ने सरकार से उनकी शिकायतों का समाधान करने का आश्वासन मिलने के बाद शुक्रवार देर रात अपना धरना समाप्त

कर दिया। उनकी शिकायतों के समाधान के पहले कदम के तहत निशाने पर आए भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) अध्यक्षबृजभूषण शरण सिंह को अध्यक्ष पद की जिम्मेदारियों से अलग किया जा रहा है। केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर के साथ दूसरे दौर की वार्ता में गतिरोध दूर होने पर विनेश फोगाट, बंजरग पुनिया, साक्षी मलिक और रवि दहिया सहित अन्य पहलवानोंने अपना धरना समाप्त करने का फैसला किया। उन्होंने भारतीय कुश्ती महासंघ और उसके अध्यक्ष के खिलाफ यौन उत्पीड़न और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था। ठाकुर ने मैराथन बैठक के बाद कहा, एक निगरानी समिति बनाने का फैसला किया गया है जिसके सदस्यों के नामों की घोषणा कल की जाएगी। समिति चार हफ्ते में जांच पूरी करेगी। वह डब्ल्यूएफआई और इसके अध्यक्ष के खिलाफ वित्तीय या यौन उत्पीड़ के सभी आरोपों की गंभीरता से जांच करेगी।उन्होंने बताया, जांच पूरी होने तक वह (सिंह) अलग रहेंगे और जांच में सहयोग करेंगे जबकि डब्ल्यूएफआई के रोजमर्रा के काम को निगरानी समिति देखेगी।

Kent RO सिस्टम्स की कूलब्रांड नाम से पंखा बाजार में दस्तक

नई दिल्ली। जल शोधन यानी आरओ बनाने वाली प्रमुख कंपनी ने कम बिजली खपत वाले बीएलडीसी (ब्रशलेस डायरेक्ट करंट) प्रौद्योगिकी से लैस पंखे बाजार में पेश किए। कंपनी इस उत्पाद के विनिर्माण के लिये उत्तर प्रदेश के नोएडा में यमुना एक्सप्रेस-वे पर नया कारखाना लगाएगी। केंट आरओ सिस्टम्स ने शुक्रवार को देश के पंखा बाजार में दस्तक दी। कंपनी ने कूल ब्रांड नाम से कम बिजली खपत करने वाला अत्याधुनिक पंखा पेश किया। जल शोधन यानी आरओ बनाने वाली प्रमुख कंपनी ने कम बिजली खपत वाले बीएलडीसी (ब्रशलेस डायरेक्ट करंट) प्रौद्योगिकी से लैस पंखे बाजार में पेश किए। कंपनी इस उत्पाद के विनिर्माण के लिये उत्तर प्रदेश के नोएडा में यमुना एक्सप्रेस-वे पर नया कारखाना लगाएगी। केंट आरओ सिस्टम्स के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक महेश गुप्ता ने कहा, बीएलडीसी पंखे आम पंखों की तुलना में कम से कम 65 प्रतिशत कम बिजली खपत करते हैं। उन्होंने कहा, अगर देश में 120 करोड़ घरेलू पंखे बीएलडीसी प्रौद्योगिकी वाले पंखों से बदल जाएं तो प्रतिवर्ष दो लाख करोड़ रुपये की बिजली की बचत की जा सकती है। गुप्ता ने कहा, देश ने कम ऊर्जा खपत वाले बल्ब ट्यूबलाइट, एसी और फ्रिज को बढ़ावा देने में उल्लेखनीय प्रगति की है। लेकिन छत वाले पंखे उपयोग करने वाले 90 प्रतिशत घरों में से सिर्फ तीन प्रतिशत ही ऊर्जा बचत वाले पंखों का उपयोग कर रहे हैं। कूलपंखे ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बीईई) की पांच सितारा रेटिंग से लैस हैं। इसे वाई-फाई, रिमोट, वॉयस कमांडऔर मोबाइल फोन के जरिये चलाया जा सकता है। केंट आरओ पंखों का निर्यात करने की भी योजना बना रही है।

ChatGPT पर अडाणी का दिल आया, कहा- चिप की तरह एआई के लिए भी जटिल होगी दौड़

नई दिल्ली। अडाणी का कारोबार हाल के वर्षों में खानों, बंदरगाहों और बिजली संयंत्रों से हवाईअड्डों, डेटा केंद्रों और रक्षा क्षेत्र तक फैला है। उन्होंने दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की बैठक में भाग लेने के बाद अपने विचार व्यक्ति किए। उन्होंने सोशल मीडिया मंच लिंक्डइन पर लिखा, बैठकों के लिहाज से यह शायद मेरा सबसे व्यस्त डब्ल्यूईएफ था। एशिया के सबसे धनी व्यक्ति गौतम अडाणी का दिल चैटजीपीटी पर आ गया है। यह कृत्रिम मेधा पर आधारित एक कार्यक्रम है और खुद से चुटकुले लिखने, कंप्यूटर कोड को त्रुटीहीन बनाने और यहां तक कि कविताएं और निबंध तैयार करने में भी सक्षम है। अडाणी का कारोबार हाल के वर्षों में खानों, बंदरगाहों और बिजली संयंत्रों से हवाईअड्डों, डेटा केंद्रों और रक्षा क्षेत्र तक फैला है। उन्होंने दावोस में विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की बैठक में भाग लेने के बाद अपने विचार व्यक्ति किए। उन्होंने सोशल मीडिया मंच लिंक्डइन पर लिखा, बैठकों के लिहाज से यह शायद मेरा सबसे व्यस्त डब्ल्यूईएफ था। मैं एक दर्जन से अधिक राष्ट्राध्यक्षों और कई व्यापारिक नेताओं से मिला। विश्व आर्थिक मंच में सभी चचाओं के दौरान कृत्रिम मेधा (एआई) या लिखने-पढ़ने के संदर्भ में सृजित करने में योगदान देने वाले (जेनरेटिव) एआई में प्रगति का विषय छाया रहा। उन्होंने कहा, हाल में चैटजीपीटी के आने से एआई के लोकतंत्रीकरण में एक परिवर्तनकारी क्षण आया है। इसकी आश्चर्यजनक क्षमताओं के साथ ही हास्यपूर्ण विफलताओं को देखना रोचक है। मुझे इसका उपयोग शुरू करने के बाद से कुछ हद तक इसकी आदत लगने की बात स्वीकार करनी चाहिए। अडाणी ने कहा कि लिखने-पढ़ने के संदर्भ में सृजित करने में योगदान देने वाले एआई के व्यापक प्रभाव होंगे, और चिप डिजाइन तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन में अग्रणी होने के कारण अमेरिका बाकी दुनिया से आगे है। अडाणी ने लिखा कि इससे आधुनिक युद्ध में उपयोग किए जाने वाले हथियारों के लिए रास्ता भी खुलेगा। उन्होंने कहा, एआई में समान रूप से क्षमता और खतरे, दोनों हैं। दौड़ पहले से ही जारी है। एआई पर सबसे अधिक उद्धृत वैज्ञानिक शोध पत्रों की संख्या में चीन अमेरिका को पीछे छोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी दौड़ है, जो जल्द ही जटिल हो जाएगी और पहले से जारी सिलिकॉन चिप युद्ध की तरह उलझ जाएगी।

रक्षा मंत्रालय ने अपने क्षेत्र में दूरसंचार अवसंरचना स्थापित करने के नियमों में ढील दी

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने अपने क्षेत्र में मोबाइल टावर, ऑप्टिकल फाइबर और अन्य दूरसंचार अवसंरचना स्थापित करने के नियमों को आसान बनाया है। दूरसंचार मंत्रालय द्वारा 2016 में अधिसूचित नियम मार्ग का अधिकार (आरओडब्ल्यू) के अनुरूप यह ढील दी गई है। गति शक्ति पोर्टल पर बृहस्पतिवार को नए नियमों की एक प्रति अपलोड की गई। इन नियमों ने फरवरी 2018 में जारी सैन्य केंद्र / छावनियों में संचार नेटवर्क का विस्तार करने के लिए साझा संचार टावर और अन्य दूरसंचार

बुनियादी ढांचा की जगह ली है। नए नियम के अनुसार, ... रक्षा भूमि के नीचे या जमीन के ऊपर दूरसंचार अवसंरचना की स्थापना के लिए मिले किसी भी आवेदन पर भारतीय टेलीग्राफ मार्ग अधिकार नियमों 2016 (समय-समय पर संशोधित) के अनुसार विचार किया जाएगा। नए नियमों में यह भी कह गया कि दूरसंचार विभाग द्वारा बनाई गई अतिरिक्त दशाओं को भी ध्यान में रखा जाएगा। छावनियों के भीतरी क्षेत्रों में दूरसंचार अवसंरचना की स्थापना के लिए छावनी बोर्ड को उस संगठन से अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) लेना होगा, जिसके प्रबंधन के तहत रक्षा भूमि रखी गई है। नए नियम के अनुसार नागरिक क्षेत्र के बाहर सभी स्थानों के लिए छावनी बोर्ड को स्टेशन मुख्यालय से एनओसी लेनी होगी। इस संबंध में रक्षा संपदा महानिदेशालय इलेक्ट्रॉनिक आवेदन प्रक्रिया के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल का विकास और रखरखाव करेगा। इसे दूरसंचार विभाग के संचार पोर्टल के साथ जोड़ा जाएगा।

यात्रियों को छोड़ समय से पहले उड़ान भरने के मामले में DGCA ने दिया बड़ा बयान, 18 जनवरी का है वाकया

नई दिल्ली। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने शनिवार को कहा कि 18 जनवरी को अमृतसर-सिंगापुर उड़ान के समय में बदलाव कर यात्रियों को छोड़कर चले जाने के मामले में स्कूट की ओर से प्रतिक्रिया मिली है। नियामक के अनुसार अमृतसर हवाई अड्डे पर कोहरे की स्थिति को देखते हुए उड़ान के समय में बदलाव किया गया था। डीजीसीए ने एक बयान में कहा कि उसने स्कूट से 18 जनवरी को अमृतसर से सिंगापुर के लिए उड़ान भरने वाली उड़ान के संबंध में रिपोर्ट मांगी थी। इस वाकये में 17 यात्री प्रभावित हुए थे। दरअसल उनके ट्रैवल एजेंट ने उन्हें समय में बदलाव के बारे में सूचित नहीं किया था। दरअसल, अमृतसर के श्री गुरु रामदास इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर बुधवार (18 जनवरी) को स्कूट एयरलाइन का एक विमान अपने पूर्व निर्धारित समय से पांच घंटे पहले रवाना हो गया था। इससे 35 यात्री एयरपोर्ट पर ही छूट गए थे। सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया जाने के लिए जब यात्री एयरपोर्ट पहुंचे उनका विमान उड़ान भर चुका था। उस दौरान 35 यात्रियों ने जमकर हंगामा किया। वहीं उड़ान के समय में बदलाव करने की वजह से यात्रियों को हुई परेशानी के लिए एयरलाइन ने माफी मांगी थी। प्रभावित यात्रियों को एयरलाइन की ओर से उपलब्ध कराए गए विकल्पों का हवाला देते हुए उड्डयन क्षेत्र की नियामक संस्था डीजीसीए ने कहा कि मामले में यात्रियों का ध्यान रखा गया। नियामक ने एयरलाइन की त्वरित प्रतिक्रिया की सराहना की।

रिलायंस का शुद्ध लाभ तीसरी तिमाही में 15 फीसदी घटा; जियो के शुद्ध मुनाफे में 28.3 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिडेट का शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 15 फीसदी घटकर 15,792 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने शुक्रवार को शेयर बाजार को यह जानकारी दी। कंपनी ने बताया कि 2022-23 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में शुद्ध लाभ 15,792 करोड़ रहा, जबकि पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 18,549 करोड़ रुपये था। कंपनी की आय दिसंबर तिमाही में बढ़कर 2,20,592 करोड़ रही, जबकि बीते वित्त वर्ष की इसी तिमाही में यह 1,91,271 करोड़ रुपये थी। वहीं, देश की सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो का शुद्ध मुनाफा चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 28.3 प्रतिशत बढ़कर 4,638 करोड़ रुपये रहा। रिलायंस जियो ने शेयर बाजार को बताया कि उसने पिछले वित्त वर्ष 2021-22 की इसी तिमाही में 3,615 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था। कंपनी की आय चालू वित्त वर्ष की अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में बढ़कर 22,993 करोड़ रुपये हो गयी, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में 19,347 करोड़ रुपये थी। रिलायंस जियो के बयान के अनुसार दिसंबर तिमाही में अन्य आय 63 करोड़ रुपये रही। यह एक साल पहले की समान अवधि में 155 करोड़ रुपये थी। इस दौरान ए इ क ळ ऊ अ 12,009 करोड़ रुपये रहा। एक साल पहले की समान अवधि में यह 22,521 करोड़ रुपये था। कंपनी का परिचालन मार्जिन सालाना आधार पर 50 आधार अंक बढ़कर 26.6 प्रतिशत हो गया है। दिसंबर तिमाही के दौरान कंपनी का शुद्ध लाभ मार्जिन 17.1 प्रतिशत रहा जो एक साल पहले इसी तिमाही में 15.9 प्रतिशत था।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने खारिज किया बैंक और आरबीआई का फैसला, निवेशकों को मिली राहत

नई दिल्ली। यस बैंक के टियर-1 बॉन्ड में बैंक और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को जोरदार झटका लगा है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने शुक्रवार को इन दोनों के राइट ऑफ के फैसले को खारिज किया। इससे निवेशकों को राहत मिली है। कोर्ट ने यस बैंक को 6 हफ्ते के अंदर आदेश लागू करने को कहा है। दरअसल, यस बैंक ने 2016-19 के बीच करीब 8,415 करोड़ रुपये का टियर-1 (एटी) बॉन्ड जारी किया था। इसे सुपर एफडी नाम दिया था। इस पर 9 से 9.50 फीसदी सालाना ब्याज मिल रहा था। इसमें 1,300 खुदरा निवेशकों के अलावा निप्पॉन, फ्रैंकलिन टेंपल्टन, यूटीआई और बड़ौदा एसेट जैसी म्यूचुअल फंड की 32 योजनाओं और संस्थागत निवेशक थे।

रजनीकांत स्टारर जेलर से तमन्ना भाटिया का पहला लुक आउट

साउथ सिनेमा से लेकर बॉलीवुड तक अपनी एक्टिंग का जादू चलाने वाली एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। बीते कुछ वक्त से तमन्ना और एक्टर विजय वर्मा के अफेयर की खबरें फिल्मी गलियारों में फैली हुई हैं। दोनों को कई बार एक साथ स्पॉट किया गया जिसके बाद से ऐसी खबरें है कि इन दिनों ये स्टार्स एक दूसरे को डेट कर रहे हैं। हालांकि अपनी लव लाइफ को लेकर लाइमलाइट में बनी हुई तमन्ना अब अपनी अपकमिंग फिल्म को लेकर चर्चा का विषय बन गई हैं। एक्ट्रेस ने अपने फैंस के साथ एक खुशखबरी साझा की है जिसके बाद से वह लगातार सुर्खियों में छाई हुई हैं। कई बड़े स्टार्स के साथ काम कर चुकी तमन्ना अब जल्द ही सुपरस्टार रजनीकांत के साथ नजर आएंगी। कॉलीवुड सुपरस्टार रजनीकांत की अपकमिंग फिल्म जेलर पिछले काफी वक्त से सुर्खियों में है। इस फिल्म को बीस्ट फिल्म के निर्देशक नेल्सन दिलीप कुमार बना रहे हैं। फिल्म को लेकर लंबे वक्त से दर्शकों के बीच खासा बज बना हुआ है। अब इस फिल्म की स्टारकास्ट में बाहुबली स्टार तमन्ना भाटिया की एंट्री हुई है। इस खबर से साउथ से लेकर बॉलीवुड जगत में हलचल मच गई है। तमन्ना भाटिया ने अपने आॅफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल के जरिए ये ऐलान किया है कि वो सुपरस्टार रजनीकांत की पैन इंडिया फिल्म जेलर में नजर आने वाली हैं। इसी के साथ एक्ट्रेस ने फिल्म से अपना फर्स्ट लुक भी शेयर किया है। पोस्टर में एक्ट्रेस पीछे मुड़कर देखती दिखाई दे रही हैं। उनका लुक अब तक की उनकी फिल्मों से काफी अलग दिख रहा है जिसे फैंस काफी पसंद भी कर रहे हैं। जेलर से अपने लुक को शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने कैप्शन में लिखा, अंत में मैं इसे आप सभी के साथ साझा कर सकती हूं... खबर आ गई है! नेल्सन दिलीप कुमार द्वारा निर्देशित एकमात्र थलाइवा रजनीकांत सर के साथ फिल्म जेलर का हिस्सा बनकर मैं बहुत खुश और सम्मानित महसूस कर रही हूं। इस अनुभव को आप सभी के साथ साझा करने के लिए और इंतजार नहीं कर सकती...बता दें कि सुपरस्टार रजनीकांत का क्रेज साउथ ही नहीं बल्कि नॉर्थ में भी काफी ज्यादा है। उनकी फिल्म रोबोट और 2.0 को दर्शकों ने काफी पसंद किया था। रजनीकांत की हर फिल्म के ऐलान के साथ ही फैंस की एक्साइटमेंट अलग लेवल पर होती है। जेलर की रिलीज का इंतजार सुपरस्टार के फैंस बड़ी बेसब्री से कर रहे हैं। वहीं एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया भी बाहुबली के अलावा हिम्मतवाला, हमशक्ल और एंटरटेनमेंट जैसी फिल्मों से नॉर्थ के दर्शकों के बीच काफी मशहूर हो चुकी हैं। ऐसे में पैन इंडिया स्तर पर रिलीज होने वाली फिल्म जेलर को भी तमन्ना की पॉपुलैरिटी का भी फायदा मिल सकता है। मेकर्स को भी तमन्ना और रजनीकांत स्टारर जेलर से काफी उम्मीदें हैं।

अब बॉलीवुड की ये खूबसूरत हसीना बनेगी दुल्हन

फरवरी में दृश्यम 2 के डायरेक्टर संग लेंगी सात फेरे

नए साल के आगाज के साथ ही बॉलीवुड में शादियों का सीजन भी शुरू हो गया है। बॉलीवुड स्टार्स लगातार अपनी शादी को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। जहां एक तरह सुनील शेट्टी की लाडली अथिया शेट्टी और मशहूर क्रिकेटर केएल राहुल की शादियों की तैयारियां जोरो पर हैं। अथिया और राहुल के अलावा शेरशाह स्टार्स सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी भी अपनी गुपचुप शादी की तैयारियों में लगे हुए हैं। इसी बीच अब खबर आ रही है कि अजय देवगन स्टारर दृश्यम 2 के डायरेक्टर अभिषेक पाठक भी जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। डायरेक्टर का दिल बॉलीवुड की एक खूबसूरत हसीना पर आ गया है। जो कोई और नहीं बल्कि विद्युत जामवाल की फिल्म खुदा हाफिज एक्ट्रेस शिवालिका ओबेरॉय है। वहीं अभिषेक और शिवालिका की शादी को लेकर नया अपडेट सामने आया है। बता दें कि शिवालिका ओबेरॉय और अभिषेक पाठक काफी टाइम से एक दूसरे को डेट कर रहे हैं। दोनों की पहली मुलाकात फिल्म खुदा हाफिज के सेट पर ही हुई थी। दिलचस्प बात ये है कि अभिषेक इस फिल्म के निमार्ता थे। जहां से दोनों का प्यार परवान चढ़ा था और कुछ ही वक्त पहले अभिषेक ने शिवालिका को तुर्की में हॉट एयर बैलून्स तले शादी के लिए प्रपोज किया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों फरवरी में गोवा में शादी करने वाले हैं। ये दो दिनों की इंटिमेट फंक्शन होगी, जहां कुछ नजदीकी दोस्त और फैमिली शामिल होंगे। हालांकि अभी तक इनकी शादी को डेट को लेकर कोई जानकारी सामने नहीं आई है। फिलहाल दोनों की फैमली ने गुपचुप तरीके से शादी की तैयारियां शुरू कर दी है। वर्क फ्रंट की बात करें को अदाकारा शिवालेका ओबेरॉय ने अमरीश पुरी के पोते वर्धन पुरी के साथ ये साली आशिकी से बॉलीवुड में अपनी शुरूआत की। इसके अलावा वह खुदा हाफिज और खुदा हाफिज चैप्टर 2 में एक्टर विद्युत जामवाल के अपोजिट नजर आई थीं। वहीं अभिषेक पाठक ने साल 2022 में अजय देवगन और तब्बू स्टारर दृश्यम 2 को डायरेक्ट किया है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई की थी।

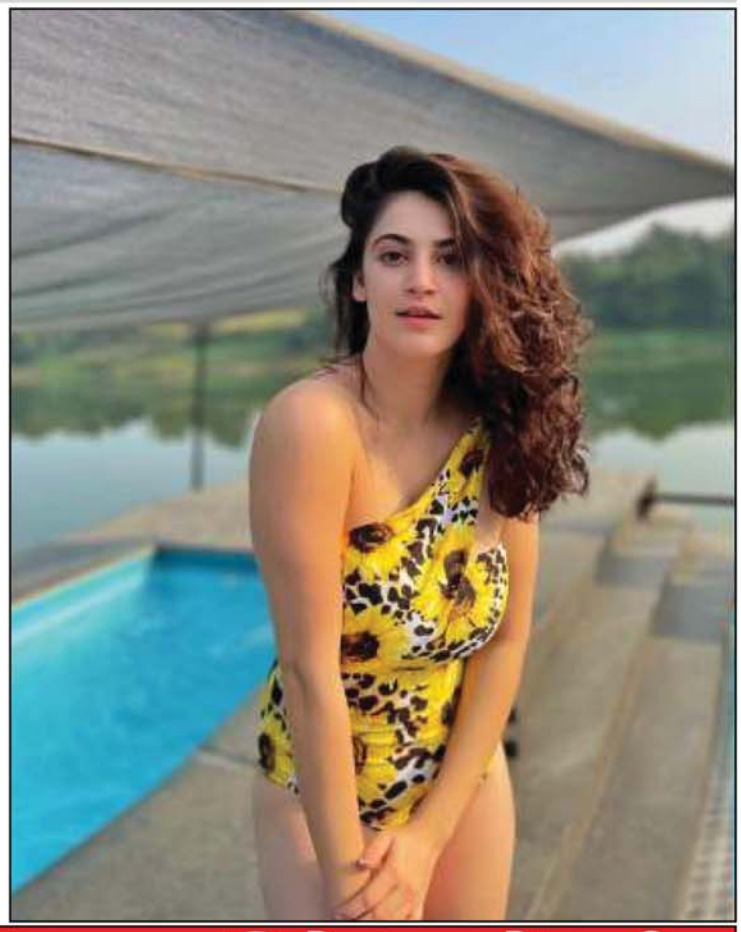

मां बनने के बाद 5 साल तक डिप्रेशन में रही श्वेता कवात्रा अब किया चैंकाने वाला खुलासा

कहानी घर घर की फेम टीवी एक्ट्रेस श्वेता कवात्रा ने अब एक बड़ा चैंकाने वाला खुलासा किया है। एक्ट्रेस ने खुलेआम इस बात को कुबूल किया है कि वो डिप्रेशन के दर्द से जूझ चुकी हैं। दरअसल, प्रेग्नेंसी के बाद कई औरतों को च्वेजचंतजनउ क्मचतमेपवद हो जाता है, बस एक्ट्रेस भी इसी का शिकार हो गई थीं। वो भी इस फेज से गुजर चुकी हैं। अब श्वेता ने बताया कि बेटी के जन्म के बाद वो पूरे 5 सालों तक डिप्रेशन से जूझती रहीं। आपको बता दें, श्वेता एक्टिंग से दूर हैं और वो काउंसलिंग में मन लगा रही हैं। श्वेता ने बताया कि मेंटल हेल्थ के इश्यूज से गुजरने के बाद अब वो लोगों की काउंसलिंग भी करती हैं। मीडिया संग बातचीत में एक्ट्रेस ने कहा कि बेटी के जन्म के बाद वो डिप्रेशन का शिकार हो गई थीं और उन्होंने करीब 5 सालों तक इससे डील किया। श्वेता ने कहा, डिलीवरी के बाद डिप्रेशन का एक्सपीरियंस करने के बाद मैं अपनी जिंदगी को ऐसे नहीं देखती थी, जैसे पहले देखती थी। ज्यादातर लोग डिप्रेशन को हल्के में लेते हैं लेकिन ये सच है। इससे हमारे शरीर में कैमिकल चेंज होता है और सिर्फ लो फील नहीं होता बल्कि बोरियत जैसा महसूस होता है। मैंने 5 सालों तक इसे झेला है। भले ही इस दौरान मुझे मेरे पति और फैमिली का सपोर्ट था, लेकिन वो भी नहीं समझ पा रहे थे कि मेरे साथ क्या हो रहा था। इसलिए मैंने बीमारी को समझने के लिए पढ़ाई की। श्वेता ने बताया कि डिप्रेशन के बाद अब वो लोगों की काउंसलिंग करती हैं और जब उन्हें रेड फ्लैग दिखता है तो वो उन्हें साइकोलॉजिस्ट को रिफेर कर देती हैं। आपको बता दें कि एक्ट्रेस ने रेशनल इमोटिव बिहेविअर थेरेपी में डबल सर्टिफिकेशन कोर्स किया है।वहीं, इससे पहले श्वेता अपने एक वीडियो को लेकर सुर्खियों में आई थीं, जिसमें उन्होंने एयरलाइन कंपनी के स्टाफ पर आरोप लगाया था कि स्टाफ ने उनके साथ बद्तमीजी की थी। एक्ट्रेस ने बताया कि वो एयरपोर्ट पर अपनी बेटी के साथ 26 से 30 घंटे तक फंसी रहीं। उनका लगेज भी मिसिंग था और किसी ने भी उनकी मदद नहीं की।

संभावना सेठ ने पापा का सपना पूरा करने के लिए पॉलिटिक्स में ली एंट्री, आप में हुई शामिल

संभावना सेठ एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री का जाना-माना नाम हैं। उन्होंने कई टीवी और रियलिटी शोज में काम किया हैं। साथ ही संभावना भोजपुरी इंडस्ट्री में खासा नाम कमा चुकी हैं। वहीं, इन दिनों वो अपनी व्लॉगिंग के लिए सुर्खियों में बनी रहती हैं। दरअसल, एक्ट्रेस अपने यूट्यूब चैनल पर डेली व्लॉगस बनती हैं जिसे लोग खूब पसंद करते हैं। वहीं, अब ऐसा लगता है एक्टर, डांसर और व्लॉगर बनने के बाद उन्होंने अपने करियर में बड़ा यू-टर्न ले लिया है। अब संभावना सेठ ने पॉलिटिक्स में भी अपनी किस्मत आजमाने का फैसला ले लिया है। इतना ही नहीं अब उन्होंने एक पोलिटिकल पार्टी भी ज्वाइन कर ली है। इस बात का ऐलान खुद एक्ट्रेस ने अपने ऑफिशियल सोशल मीडिया अकाउंट से किया। आपको बता दें, संभावना सेठ ने शुक्रवार को आम आदमी पार्टी जॉइन कर ली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दिल्ली में आप दफ्तर में संभावना को पार्टी की सदस्यता दिलाई गई और उनका स्वागत किया गया। इस दौरान प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा गया कि संभावना सेठ के ज्वाइन करने से पार्टी को मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और बाकी जगहों पर भी मजबूती मिलेगी और अरविंद केजरीवाल के विजन को देशभर में ले जाने में मदद मिलेगी। वहीं, संभावना सेठ ने कहा कि श्मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी डांस से अलग राजनीति में आऊंगी। ये मेरे नेचर में था लेकिन सोचा नहीं था। मैं कुछ अच्छा करना चाह रही हूं। मैं अपने यूट्यूब व्लॉग के जरिए भी लोगों से कनेक्ट और मदद करने की कोशिश करती हूं। चाहे डिप्रेशन की बात हो या कोविड के दौरान की परेशानी। इसके अलावा एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया पोस्ट में इस दौरान की कुछ तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, पापा का हमेशा से सपना था कि मै देश के लिए कुछ करूं, बस सही रास्ते की तालाश थी जो आज आम आदमी पार्टी के रूप में मेरे सामने आया। मुझे अपने देश के लोगों की सेवा करने का मौका देने के लिए अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया जी, संजय सिंह और डॉ.संदीप पाठक जी की बहुत शुक्रगुजार हूं। अब तक दो हाथों से जो मदद कर पाई वो की, अब हाथ बढ़े हैं तो मदद भी बढ़ेगी।

साल का बेहद ही दिलचस्प डिश लेकर आ रहे हैं कपिल शर्मा ज्विगाटो की रिलीज डेट हुई जारी

ईंडियन टेलेविजन के बेस्ट कॉमेडियन कहे जाने वाले कपिल शर्मा एक बार फिर से ऑडियंस को गुदगुदाने के लिए तैयार हो गए हैं। दरअसल कपिल शर्मा जल्द ही सिल्वर स्क्रीन पर एक

बार फिर से जबरदस्त कमबैक करने वाले हैं। कपिल अपने शो के जरिए लोगों को भरपूर मनोरंजन करते रहते है। ऐसे अब कपिल अपने फिल्म के जरिये लोगों के लिए हंसी के पिटारे के साथ-साथ कई लजीज डिश लेकर भी आने वाले हैं। दरअसल कपिल शर्मा जल्द ही नंदिता दास की अपकमिंग फिल्म ज्विगाटो में अपनी एक्टिंग से गुदगुदाने आ रहे हैं। नंदिता दास द्वारा निर्देशित और अप्लॉज एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित, फिल्म को हाल ही में टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में भी प्रदर्शित किया गया था। ऐसे में अब कपिल शर्मा के फैंस को खुश होने का एक और मौका मिल गया है। जहां कॉमेडियन इस साल का मोस्ट अवेटेड ऑर्डर लेकर जल्द ही आयने वाले हैं। और अब उस आर्डर के डिलीवरी डेट का भी अनाउंस कर दिया गया हैं। कपिल शर्मा की मोस्ट अवेटेड फिल्म ज्विगाटो की रिलीज डेट जारी कर दी गई है। ये फिल्म इस साल 17 मार्च को बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। अप्लॉज एंटरटेनमेंट के ऑफिशियल हैंडल ने इंस्टाग्राम पर बाइक पर सवार कपिल शर्मा के कैरेक्टर का एक मोशन पोस्टर भी शेयर किया और कैप्शन में लिखा है, ष्साल का सबसे मोस्ट अवेटेड ऑर्डर आखिरकार आ रहा है! ज्विगेटो. 17 मार्च को सिनेमाघरों में. फूड डिलीवरी राइड के बारे में एक दिल को छू लेने वाली कहानी स्टारर कपिल शर्मा और शाहना गोस्वामी नंदिता दास द्वारा लिखित और निर्देशित रूपहंजवव्द17जीडंतबी बुसान फिल्म फेस्टिवल में इसकी स्क्रीनिंग से पहले, कपिल शर्मा ने इंस्टाग्राम पर ज्विगाटो का ट्रेलर भी शेयर किया था। टेलर को दर्शकों का काफी ज्यादा प्यार मिलता हुआ देखा गया था। ट्रेलर देखने के बाद फिल्म की कहानी और भी दिलचसप लग रही हैं।

कांग्रेस सभी वर्गों का सम्मान एवं साथ लेकर चलने वाली पार्टी हैः डॉ. सिकरवार

ग्वालियर। ग्वालियर पूर्व विधानसभा क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 21 पंचशील नगर पार्क, वार्ड क्रमांक 26 तिकोनिया चौराहा के पास, वार्ड क्रमांक 58 जे.के. टायर पार्क हरिशंकरपुरम एवं वार्ड क्रमांक 27 रामनगर मुरार में कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित गांधी चौपाल में महापौर डॉ. श्रीमती शोभा सतीश सिकरवार एवं विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने आम जन की समस्याओं को सुना और तुरन्त संबधित अधिकारियों को निराकरण के निर्देश दिए। गांधी चौपाल कार्यक्रम में क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा महापौर डॉ. श्रीमती शोभा सतीश सिकरवार एवं विधायक डॉ. सतीश सिकरवार का पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया।

गांधी चौपाल में विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने जनता को संबोधित करते हुये कहा कि देश में अराजकता का माहौल है और नफरत फैलाने का काम भाजपा द्वारा किया जा रहा है। कांग्रेस पार्टी देश में भाईचारा बनाये रखने के लिये काम करती रही है और देश व सर्वहारा वर्ग के विकास और उत्थान के लिये कार्य रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ही एक मात्र ऐसी पार्टी है जो सभी वर्गों का सम्मान करते हुये साथ लेकर चलती है, कांग्रेस पार्टी द्वारा हमेशा से जनता के हित में कार्य किया गया है। गांधी चौपाल में महापौर डॉ. शोभा सतीश सिकरवार ने जनता को संबोधित करते हुये कहा कि देश के विकास की नीवं कांग्रेस पार्टी ने ही रखी थी, देश के युवाओं ने भाजपा पर जो भरोसा किया वह टूट चुका है, कांग्रेस पार्टी ही युवाओं को रोजगार दे सकती है। देश की हालत आप सभी देख सकते है, यह किसी से भी नहीं छिपी है। उन्होंने कहा कि जब से भाजपा सत्ता में आई है तब से देश में नफरत फैलाने का काम भाजपा द्वारा किया जा रहा है। इस मौके पर मुख्य रूप से जिला संगठन मंत्री सुरेन्द्र यादव, प्रदेश प्रवक्ता राम पाण्डे, ब्लॉक अध्यक्ष विनोद जैन, ब्लॉक अध्यक्ष महादेव अपोरिया, ब्लॉक अध्यक्ष गिर्राज शर्मा, ब्लॉक अध्यक्ष अनूप शिवहरे, पार्षद श्रीमती लक्ष्मी सुरेश गुर्जर, ब्लॉक प्रभारी चतुर्भुज धनोलिया, ब्लॉक प्रभारी के.के. शर्मा, श्रीमती सीमा समाधिया, श्रीमती वीना भारद्वाज, मंडलम् अध्यक्ष डॉ. दशरथ सिंह, वीरेन्द्र रावत, बृजेश शुक्ला, श्रीनिवास गुर्जर, योगेन्द्र सिंह तोमर नौनेरा, गजेन्द्र सिंह कुशवाह, बृजेन्द्र सिंह तोमर, वार्ड प्रभारी सुनील गुप्ता, सह प्रभारी मनीष अग्रवाल, सह प्रभारी हिमांशु कीकन, प्रतीक जैन 'लालू', राहुल गुर्जर आदि उपस्थित रहे। गांधी चौपाल कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी की विचारधारा से प्रभावित होकर विधायक डॉ. सतीश सिकरवार के समक्ष गजेन्द्र सिंह विमल, आशीष कुमार अशर?ठाना, मनोज नागर, विजय गर्ग एवं अन्य नागरिकों ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता गृहण की। गांधी चौपाल कार्यक्रम में जसवंत शेजवार, मोनू रजक, वीरेन्द्र यादव, मनीष जौहरी, ओ.पी. उचारिया, पी.के. गौतम, एस.पी. जादौन, श्रीमती सुनीता तोमर, अभिषेक जादौन, राघव पाठक, प्रमोद दिवाकर, दिनेश भदौरिया, अमित सगर, गौरव जाटव, धीरज अर्गल, फूल सिंह नेता, गुरनेन्द सिंह एड., शोभाराम माहौर, गोपाल कंषाना, राधेश्याम, राजेश सोन, रामेश्वर दयाल नागर, गोपाल राठौर, मुकेश भीलवार, कृष्णा पाल, सतेन्द्र नागर, संतोष करन, मोहन सिंह बंसल, अवनीश गौड, अनु चाचा, संजीव देवतवाल, पवन गुप्ता, सोमिल शर्मा, अशोक वाजपेयी, निरंजन बघेल, लावण्या शर्मा, मुकुल सेंगर, जीतू गुप्ता, गुलजारी लाल गुप्ता, विवेक गुप्ता, लाल जी सिकरवार, दीपक शर्मा, अनुराग सोनी, बद्रीप्रसाद अहिरवार, राजेश सोन, बृजेश धानुक, श्रीमती सरोज, श्रीमती रामवती जस्या, रामलाल बाथम, उपकार शर्मा, सतेन्द्र नागर, संतोष करन आदि मौजूद रहे।

शहीद सैनिक अंसार बेग को विधायक डा.सिकरवार ने कंधा दिया, पुष्प अर्पित किए

ग्वालियर । पंजाब के पठानकोट में गोरखा रेजीमेंट में कार्यरत सैनिक अंसार बेग का हार्ट अटैक आने से निधन हो गया। शहीद सैनिक अंसार बेग की पार्थिव देह को ग्वालियर के वंशीपुरा मुरार लाया गया। घटना की जानकारी मिलते ही विधायक डॉ सतीश सिकरवार तत्काल वंशीपुरा मुरार में निवास स्थान पर पहुंचे और पार्थिव देह पर पुष्प अर्पित कर शव यात्रा में शामिल होकर कंधा दिया और पीड़ति परिवार को डांडस बंधाया ।शहीद सैनिक की आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की।

किसानों की तरक्की से ही देश की तरक्कीः मंत्री भारत सिंह

ग्वालियर । प्रदेश के उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री भारत सिंह कुशवाह ने कहा है कि चुने हुए जनप्रतिनिधि का दायित्व होता है कि वे क्षेत्र के विकास के लिये निरंतर कार्य करें। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर क्षेत्र का विकास ही मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है। उद्यानिकी मंत्री कुशवाह ने रविवार को मुरार विकासखंड के ग्राम तुरारी में एक करोड़ 10 लाख रूपए की लागत से निर्मित होने वाली सड़क के भूमिपूजन समारोह में यह बात कही। उद्यानिकी मंत्री भारत सिंह कुशवाह ने कहा कि शीघ्र ही इस सड़क के बन जाने से ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा होगी। इसके साथ ही विद्युत सब स्टेशन का निर्माण भी शीघ्र कराया जायेगा, ताकि किसान भाईयों को वोल्टेज की समस्या से निजात मिल सके। उन्होंने कहा कि किसानों की तरक्की से देश की तरक्की होगी। किसान भाईयों के लिये केन्द्र सरकार और प्रदेश सरकार अनेक योजनाओं के माध्यम से कार्य कर रही है। किसानों की आय को बड़ाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मंत्री कुशवाह ने भूमिपूजन समारोह के साथ-साथ किसान भाईयों से भी विस्तार से चर्चा की और ग्राम की समस्याओं को सुना और संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण के निर्देश भी दिए। भूमिपूजन समारोह में जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी और बड़ी संख्या में किसान भाई उपस्थित थे।

खुशियों की दास्तांः संतुलित उर्वरक से बड़ा उत्पादन

ग्वालियर । कृषि विभाग के अधिकारियों की सलाह और संतुलित उर्वरक के साथ-साथ बायोगैस एवं नाडेप की खाद से उत्पादन में तो वृद्धि हुई है। इसके साथ ही गोबर एवं कचरे का भी सही इस्तेमाल हो सका है। कृषि विभाग की किसानों को समय-समय पर दी जाने वाली सलाह किसानों के लिये वरदान साबित हो सकती है। यह कहना है ग्राम हरीपुर विकासखंड डबरा के कृषक किशन सिंह रावत का । कृषक किशन सिंह रावत का कहना है कि कृषि विभाग की सलाह पर मैंने मृदा नमूना परीक्षण अनुशंसा के आधार पर संतुलित उर्वरकों का इस्तेमाल किया। जिसके कारण मेरी फसल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई। पहले 30 -40 क्विंटल उत्पादन होता था जो ब?कर 45-50 हैक्टेयर के मान से उत्पादन होने लगा। इसके साथ ही सरसों की फसल भी प्रति हैक्टेयर 15 क्विंटल की जगह 20 क्विंवटल हो गई। उनका कहना है कि कृषि विभाग की सलाह पर ही मैंने बायोगैस एवं नाडेप के खाद का उपयोग भी अपनी खेती में किया, जिससे मुझे बहुत लाभ हुआ है। कृषक किशन सिंह रावत का यह भी मानना है कि किसानों को कृष विभाग द्वारा समय-समय पर जो सलाह दी जाती है, किसान अगर उसे मानें और पालन करें तो उत्पादन में तो वृद्धि होगी ही, साथ ही गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। सभी किसानों को बायोगैस एवं नाडेप की खाद का अधिक से अधिक उपयोग अपनी खेती में करना चाहिए, ताकि अधिक उत्पादन हो और गुणवत्ता का उत्पादन मिल सके। इसके करने से गोबर का और कचरे का भी सही इस्तेमाल होता है।

बोलेरो गाड़ी से तीन लाख चुराने वाले दतिया से पकड़े

ग्वालियर। घाटीगांव क्षेत्र में बैंक में रूपये जमा कराने आए एक व्यक्ति की बोलेरो गाड़ी से तीन लाख रूपये से भरा बैग पार करने वाले दो बदमाशों को पुलिस ने पकड़ लिया है। इनके पास से चुराये गये 2 लाख 95 हजार नगद और घटना में प्रयुक्त स्पलेण्डर मोटर साइकिल भी बरामद कर ली गई है। एसडीओपी घाटीगांव संतोष पटेल और थाना प्रभारी घाटीगांव शैलेन्द्र सिंह गुर्जर ने बताया कि उन्हें खबर मिली थी कि चोरी की घटना के संदिग्ध दतिया के रहने वाले हैं। इस सूचना पर घाटीगांव पुलिस की एक टीम दतिया पहुंची। पुलिस टीम को दिनार रोड पर होमगार्ड कार्यालय के सामने एक संदिग्ध काले रंग की स्पलेण्डर मोटर साइकिल पर बैठा दिखा। उसने पुलिस टीम को देखकर भागने का प्रयास किया, लेकिन घेराबंदी कर खड़ी हुई पुलिस टीम द्वारा उसे मौके पर ही धर दबोच लिया गया। संदेही से उसका नाम पता पूछने पर उसने स्वयं को प्रकाश नगर, सिविल लाइन दतिया का रहने वाला बताया। पकड़े गये संदेही से पुलिस टीम द्वारा चोरी की घटना के संबंध में पूछने पर उसने बताया कि उसने अपने एक अन्य साथी की मदद से घाटीगांव में बोलेरो गाड़ी से रूपयों से भरा बैग चोरी किया था। उसने बताया कि बैग चोरी करने के बाद हम दोनों मोटर सायकिल से भाग गये थे। चोरी गये रूपयों के संबंध में उसने बताया कि बैग में तीन लाख रूपये थे जिनको हम दोनों ने आधा-आधा बांट लिया था। पकड़े गये आरोपी से 1 लाख 47 हजार तथा घटना में प्रयुक्त मोटर सायकिल को पुलिस ने जब्ता किया। उसने अपने दूसरे साथी के बारे में बताया कि वह अभी अपनी ससुराल प्रकाश नगर में है। पुलिस टीम द्वारा तत्काल प्रकाश नगर से दूसरे आरोपी को भी दबोच लिया गया। उसके पास से भी चोरी किये 1 लाख 48 हजार रूपये बरामद किये गये। पुलिस अब पकड़े गये आरोपियों से जिले में हुई अन्य चोरी की वारदातों के संबंध में पूछताछ की जा रही है। बदमाशों को पकड़ने में राहुल सेंधव, उप निरीक्षक देवेन्द्र लोधी, प्र.आर. अजय बहादुर, आरक्षक बदन सिंह जाट, राकेश शर्मा, रामगोपाल गुर्जर, लोकेश शर्मा, चंद्रशेखर जाट, नरेन्द्र, राहुल, आरक्षक रामवरण लोधी सराहनीय भूमिका रही हैं।

जेसीआई ग्वालियर मेट्रो की संयुक्त कार्यकारिणी सभा का आयोजन

ग्वालियर। जेसीआई ग्वालियर मेट्रो की संयुक्त कार्य कारिणी सभा वर्ष 2022 एवं वर्ष 2023 की सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। अध्यक्ष 2023 जेसी विपिन अग्रवाल ने अध्याय में वर्षभर होने वाले कार्यक्रमो की जानकारी पर प्रकाश डाला एवं उपाध्यक्षों द्वारा वर्षभर के कार्यक्रमो की रूपरेखा बना कर सदन में रखा गया। सभी बोर्ड मेंबर्स ने संस्था में नवीन सदस्यों को जोडने हेतु अपना दृढ संकल्प प्रकट किया । मीटिंग में मुख्य वक्ता के रूप में संस्थापक अध्यक्ष जेसी अनुपम तिवारी उपस्थिति थे। उन्होंने नई ऊर्जा के साथ जेसीआई ग्वालियर मेट्रो को शिखर पर ले जाने पर जोर दिया। संस्था के मेंटॉर जेसी विश्वकांत शर्मा, मंडल निर्देशक मैनेजमेंट और पूर्व अध्यक्ष जेसी राजेंद्र शर्मा, मंडल में नीड ब्लड कॉल जेसी पूर्व अध्यक्ष जेसी सुधीर त्रिपाठी, जोन कोऑर्डिनेटर फाउंडेशन जेसी सुदर्शन शर्मा, आई पी पी जेसी मनीष शर्मा जीए वर्ष 2023 के अध्यक्ष जेसी विपिन अग्रवाल जीए कोषाध्यक्ष जेसी विजय गोस्वामी, उपाध्यक्ष प्रबंधन जेसी संजय अग्रवाल, उपाध्यक्ष कार्यक्रम जेसी राहुल गोयल, उपाध्यक्ष प्रशिक्षण जेसी निशांत शर्मा, उपाध्यक्ष व्यवसाय जेसी एन एस वर्मा, उपाध्यक्ष ग्रोथ एंड डेवलेपमेंट जेसी विनय उपाध्याय, फाइनेंस कमेटी चेयरमैन जेसी मनोज वर्मा, जेसी दिलीप धाकड़, ग्रीटिंग चेयर पर्सन जेसी मनीष अग्रवाल, जॉइंट ट्रेज़ार जेसी विराट शर्मा,जॉइंट सेक्रेटरी जेसी मिलन गोयल, डायरेक्टर जेसी बृजेन्द्र राठौर आदि पदाधिकारी उपस्थित थे। अंत मे सचिव अतुल गर्ग ने सभी का हृदय से आभार ज्ञापित किया।

खेलो इंडिया यूथ गेम्स की शुभंकर आशा चीता के साथ स्कूली बच्चों ने रैली निकाली

ग्वालियर। खेलो इंडिया यूथ गेम्स से पहले शहर में सकारात्मक माहौल बनाने एवं ग्वालियर शहर को खेलमय करने के उद्देश्य से लगातार गतिविधियां की जा रही है इसी क्रम में रविवार को स्कूली बच्चो ने शुभंकर आशा के साथ एक बड़ी रैली निकालकर खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 का संदेश दिया। रैली को खाद बीज निगम के अध्यक्ष मुन्नालाल गोयल, नगर निगम आयुक्त किशोर कन्याल, स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती नीतू माथुर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रातः ग्वालियर के मुरार क्षेत्र में स्थित शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय से यह रैली बारादरी चौराहा होते हुए शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 पर जाकर समाप्त हुई। खेलो इंडिया गेम्स की शुभंकर आशा चीता ने भी इस पूरी रैली में बच्चो के साथ भाग लेकर सभी मे जोश भर दिया। रैली में ग्रीनवुड व विद्या भवन स्कूल के मार्च पास्ट बैंड सहित 10 से अधिक विद्यालयों के लगभग 2000 से अधिक विभिन्न खेलो के स्कूली बच्चो ने अपने अपने खेलो का रैली में प्रदर्शन करते हुए शहरवासियों से राष्ट्रीय स्तर के इस आयोजन में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। इस अवसर पर स्मार्ट सिटी सीईओ व खेलो इंडिया गेम्स की जिला स्तरीय ब्रांडिंग नोडल अधिकारी श्रीमती नीतू माथुर ने जानकारी देते हुये बताया कि ग्वालियर शहर खेलो इंडिया यूथ गेम्स के लिए तैयार है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में देश भर के शीर्षस्थ खिलाड़ी भाग लेंगे। खेलो इंडिया गेम्स से पहले शहर में खेलो के प्रति सकारात्मक माहौल बनाने के लिये लगातार विभिन्न विभागों के साथ मिलकर गतिविधियां की जा रही है श्रीमती माथुर ने शहरवासियों से भी अपील की है कि वह भी इतने बड़े आयोजन का हिस्सा बनकर खेलो इंडिया गेम्स में भाग ले रहे खिलाड़ीयो का हौसला बड़ाये। इस अवसर पर संयुक्त संचालक शिक्षा दीपक पांडेय, जिला शिक्षा अधिकारी अजय कटियार, जिला खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी जोसेफ वक्सला, जिला क्रीड़ा अधिकारी महेंद्र पाल बरैया सहीत बडी संख्या में स्कूली बच्चे और शिक्षकगण मौजूद थे।

जेसीआई ग्वालियर मेट्रो ने कुष्ट सेवा आश्रम में मकर संक्रांति पर कंबल वितरित किये

ग्वालियर। मकर सक्रांति के उपलक्ष्य में 15 जनवरी को मानवता की सेवा के लिये मानव कुष्ट सेवा आश्रम मे कुष्ट रोगियों को कंबल एवं गजक का वितरण जेसीआई ग्वालियर मेट्रो द्वारा किया गया,जिसमे सभी सदस्यों ने बढचढ कर हिस्सा लिया। इस मौके पर जॉन डारेक्टर प्रोग्राम जेसी रोहित गुप्ता, अध्यक्ष जेसी विपिन अग्रवाल,अध्याय मेंटॉर जेसी डा विश्वकांत शर्मा, पूर्व अध्यक्ष जेसी सुदर्शन शर्मा, जेसी हरिकृष्ण उपाध्याय, आई पी पी जेसी मनीष शर्मा, सुधीर त्रिपाठी रक्तसेवक, जेसी हलीम सिद्दीकी,सी अनिल कुशवाह, जेसी अतुल शर्मा, जेसी दिलीप धाकड़, जेसी विनय कुमार,सचिव जेसी अतुल गर्ग ने कार्यक्रम मे पधारे गेस्ट, पूर्व अध्यक्ष, पदाधिकारियों एवं सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी 28 एवं 29 जनवरी को ग्वालियर में

ग्वालियर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ग्वालियर एवं सहयोगी संस्था राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन के मेडिकल विंग तथा इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ग्वालियर ब्रांच के सयुंक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी का प्रेरक उदबोधन 28 जनवरी को जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वालियर के अटल सभागार में शाम साढे चार बजे से शाम 7 बजे तक होगा।

इस कार्यक्रम में प्रवेश निःशुल्क है, लेकिन पंजीयन कराना अनिवार्य है । उक्त जानकारी आज पत्रकारों को देते हुये प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयोजिका बीके आदर्श, इंडियन मेडीकल एसोसियेशन के अध्यक्ष डॉ. राहुल सप्रा ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी अपने दो दिवसीय प्रवास पर 28 जनवरी को ग्वालियर पहुंचेंगी। वह 28 को जीवाजी विवि में आयोजित कार्यक्रम में विषय इमोशनल सेफ्टी पर अपना उदबोधन देंगी। इसके साथ ही 29 जनवरी को प्रातः 8 से 11 बजे तक ग्वालियर शहर के चिकित्सकों एवं इससे जुडे पेशे को लोगों के लिए एक सेशन को विषय पेशन एंड कम्पेशन पर संबोधित करेंगी। इस कार्यक्रम में बीके शिवानी दीदी के आलावा इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शरद कुमार अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में एवं ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के राष्ट्रीय सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह माउंट आबू विशेष अतिथि के रूप में मौजूद रहेंगे। इस अवसर पर आईएमए के जिलाध्यक्ष डॉ. राहुल सप्रा ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य आध्यात्मिक सशक्तिकरण से सामाजिक परिवर्तन लाना है। यह पहला मौका होगा जब इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष ग्वालियर केवल इस तरह के कार्यक्रम तरह के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए ही आ रहे है । इस अवसर पर बीके आदर्श दीदी ने कहा कि इस दिशा में हमारी संस्था द्वारा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निरंतर आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत की ओर एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है । उन्होंने बताया कि इस आयोजन के 28 जनवरी के सत्र में लगभग 2000 से अधिक लोग शामिल होंगे। वहीं जीवाजी विश्वविद्यालय के एक अन्य हाल में बडी स्क्रीन लगाकर बीके शिवानी दीदी का प्रवचन जनता के समक्ष रखेंगे। बीके आदर्श दीदी ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी दोपहर में ग्वालियर पहुंचेंगी। जिनका संस्थान की ओर से आत्मीय स्वागत किया जायेगा। पत्रकार वार्ता मेंए संस्थान से मीडिया प्रभारी बीके प्रहलाद, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ग्वालियर सचिव डॉ. ब्रजेश सिंघल, ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग जोनल संयोजक डॉ. गुरचरण सिंह भी मौजूद रहे।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478